ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

*गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥*
*अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥*

मासिक

# गुरमति ज्ञान

पौष-माघ, संवत् नानकशाही ५४५
वर्ष ७ अंक ५ जनवरी **2014**

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए., एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ *एम. ए., एम. एम. सी.*

**चंदा**

| | |
|---|---|
| सालाना (देश) | १० रुपये |
| आजीवन (देश) | १०० रुपये |
| सालाना (विदेश) | २५० रुपये |
| प्रति कापी | ३ रुपये |

*चंदा भेजने का पता*
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**



फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

Final

विषय-सूची

# गुरबाणी विचार

*भूंडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी ॥*
*नेत्री धुंधि करन भए बहरे मनमुखि नामु न जानी ॥१॥*
*अंधुले किआ पाइआ जगि आइ ॥*
*रामु रिदै नही गुर की सेवा चाले मूलु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥*
*जिहवा रंगि नही हरि राती जब बोलै तब फीके ॥*
*संत जना की निंदा विआपसि पसू भए कदे होहि न नीके ॥२॥*
*अंम्रित का रसु विरली पाइआ सतिगुर मेलि मिलाए ॥*
*जब लगु सबद भेदु नही आइआ तब लगु कालु संताए ॥३॥*
*अन को दरु घरु कबहू न जानसि एको दरु सचिआरा ॥*
*गुर परसादि परम पदु पाइआ नानकु कहै विचारा ॥४॥* *(पन्ना ११२६)*

गुरबाणी मनुष्य को अपना जन्म सफल कर जाने हेतु हर समय सुचेत करती है। भैरउ राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में भी श्री गुरु नानक देव जी मनुष्य को उसके जीवन-उद्देश्य को याद करवाते हुए फरमान कर रहे हैं कि हे मानव! बुढ़ापा आ जाने के कारण तेरी चाल लड़खड़ाने लगी है; तेरे हाथ-पांव शिथिल पड़ने लगे हैं; तेरे शरीर पर झुर्रियां पड़ने लगी हैं; तेरी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा है; तेने कान बहरे होने लगे हैं, मगर फिर भी तू अपने मन के पीछे लगकर दुनियादारी में ही उलझा पड़ा है, जीवन-मुक्ति के लिए परमात्मा का ख़्याल तेरे मन में नहीं आ रहा है। दुनियावी पदार्थों के मोह में अंधे जीव! तूने इस जग में आकर क्या कमाया है? अर्थात् आध्यात्मिक पक्ष से तेरी कमाई शून्य है। तूने अपने हृदय-घर में बसे परमात्मा को नहीं जाना अर्थात् उसे अनुभव नहीं किया; गुरु-दर्शाए मार्ग को नहीं अपनाया। ऐसे में तूने अपना पहला आध्यात्मिक जीवन अर्थात् मूल भी गंवा लिया।

गुरु जी का आगे फरमान है कि हे मानव! तेरी जिह्वा प्रभु-स्तुति में रंगी नहीं गई अर्थात् जिह्वा द्वारा तूने प्रभु को याद नहीं किया। प्रभु-स्मरण किए बिना वो जब भी बोलती है, फीके (कड़वे, दूसरों को दुख देने वाले) वचन ही बोलती है। इस (प्रभु-गुण-विहीन) जिह्वा द्वावा तूने हमेशा भले पुरुषों की निंदा ही की है। तेरे सारे काम पशुओं वाले हैं। इन्हें कोई अच्छा नहीं कह सकता। गुरु जी का कहना है कि आत्मिक जीवन की बख़्शिश उन्हीं लोगों को होती है जो सतिगुरु की बख़्शिश का पात्र बनते हैं, जो सतसंगत में जाते हैं। ऐसे लोगों को प्रभु-नाम-अमृत का रस जीवन में मिलने लगता है। जब तक मनुष्य को इस भेद का पता नहीं चलता, प्रभु-प्राप्ति के रहस्य का पता नहीं चलता तब तक वो ऐसे कर्मों में लिप्त रहता है जिनके कारण उसे काल (मृत्यु) का भय व्याप्त रहता है। सतिगुरु की कृपा प्राप्त मनुष्य एक ही सच्चे दर, प्रभु-दर पर ही आकर नत्मस्तक होते हैं। उन्हें अन्य कोई दर अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार सतिगुरु की कृपा द्वारा वे सर्वोच्च पद, परम पद, आत्मिक पद प्राप्त कर लेते हैं। 

Final




# बादशाह दरवेश गुरु गोबिंद सिंघ जी

पंद्रहवीं शताब्दी में मनुष्य की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सभ्याचारक तथा मानसिक गुलामी के विरुद्ध श्री गुरु नानक देव जी द्वारा ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की गयी। इन गुलामियों ने मनुष्य को इतना कमज़ोर कर दिया था कि उसने इन परिस्थितियों में ही विचरना सीख लिया। सदियों से गुलामी झेलते हुए हिंदोस्तानी इसके आदी होकर गुलामी को अपनी तकदीर ही मानने लग गए थे। इस गुलामी की ज़िल्लत भरी ज़िंदगी में से निकालने हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने सबसे पहले समस्त मानवता में एकता की भावना भरने के लिए *'न को हिंदू ना मुसलमान'* का संदेश देकर सबको एक मंच पर एकत्र किया। दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसी जद्दोजहद को शिखर तक पहुंचाया तथा ज़ालिम मुगल राज्य की जड़ें हिलाकर रख दीं।

दशम पातशाह जी का प्रकाश नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के गृह में माता गुजरी जी की पावन कोख से पटना साहिब में हुआ। आप जी के प्रकाश के समय श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी आसाम में सिक्खी-प्रचार के लिए गए हुए थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म की ख़बर ढाका में पहुंचाई गयी। गुरु जी के प्रकाश का इलहाम ज़िला करनाल के गांव ठसका के पीर भीखण शाह सैयद को हुआ तो पीर जी तुरंत पंजाब से पटना साहिब की ओर चल दिए। पटना साहिब पहुंचकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नूरानी मुखड़े को देखकर पीर भीखण शाह निहाल हो गए। पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की पढ़ाई व सिखलाई मामा क्रिपाल जी तथा माता गुजरी जी ने बड़ी सूझबूझ से की। गुरमुखी एवं गुरबाणी की शिक्षा के साथ-साथ नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी द्वारा प्राप्त आदेशों-निर्देशों के मुताबिक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को घुड़सवारी व शस्त्र-विद्या भी प्रदान की गयी।

पटना साहिब में विचरते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने बाल साथियों के साथ खेल खेलते। ये खेल आम बालकों के खेलों से विलक्षण होते। आप जी के खेल जंगी करिश्मों से भरपूर होते थे। आप जी द्वारा बाल साथियों के दो दल बनाकर परस्पर युद्ध करने की तरह खेल खेले जाते थे। पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा अपने बाल-जीवन में किए गए कारनामों में से राजा फ़तहि चंद मैणी और उसकी रानी के साथ मेल-मिलाप का दृश्य विस्मादी है। वृत्तांत पाठकों-श्रोताओं के हृदय में झनझनाहट पैदा करने वाला है :-

" . . . वे हर रोज़ दशमेश जी का ध्यान मन में धारकर इंतज़ार में बैठे रहते। एक दिन पालथी लगाई, आँखें मूंदी, ध्यान धरकर बाल-गुरु जी का इंतज़ार कर रहे थे। झटपट छोटी-छोटी कोमल बाँहें रानी के गले में पड़ गयीं। कसकर आलिंगन हुआ। गोद में एक

सुंदर तथा रब्बी नूर भरे चेहरे वाला सुडौल बालक आ बैठा तथा गुलाब जैसे मुखड़े में से सुरीली आवाज़ निकली . . . 'मां जी! मैं आ गया।' . . . रानी ने मिठाई दी। आगे से श्री दशमेश जी बोले, "मैंने मिठाई नहीं खानी मां जी! वे तले हुए चने तथा दूध की पूरी दो, जो अंदर चौंके में रखी हुई है।"

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का आदेश पहुंचने पर गुरु-परिवार श्री अनंदपुर साहिब की ओर चल पड़ा। यह वियोग पटना साहिब की संगत के लिए असहनीय था। गुरु जी से सम्बंधित वस्तुओं को पटना निवासियों ने याद के रूप में संभाल लिया। इन वस्तुओं के आज भी संगत दर्शन कर निहाल हो जाती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब पहुंचकर जो भी कार्य किए वे विश्व के इतिहास में विलक्षण स्थान रखते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने युग को पूरी तरह से बदल दिया। गुरु जी ने १७५६ बिक्रमी के प्रथम वैसाख वाले दिन 'पांच प्यारों' का चुनाव करके सिक्ख पंथ को शिखर पर पहुंचाते हुए उसे खालसा पंथ का स्वरूप प्रदान किया। गुरु जी ने पंथ को *"सिरु धरि तली गली मेरी आउ"* की कसौटी पर परखकर विशेष रुतबे का सम्मान बख़्शा। गुरु जी ने खुद 'पांच प्यारों' के समक्ष खंडे की पाहुल के लिए निवेदन किया। इस घटना के बाद हिंदोस्तान की वर्षों से दबी-कुचली, दुत्कारी जाने वाली, जात-पात के चक्र में फंसी कौमों को हीन भावना से पूरी तरह से मुक्त होने के पथ पर अग्रसर होने का अवसर मिला। गुरु जी ने जुल्मी शासकों को मुंहतोड़ जवाब देकर उनका दर्प चूर किया। गुरु जी ने अपना सारा जीवन मानवता की स्वतंत्रता हेतु लगा दिया। इस कार्य के लिए गुरु जी ने अपना परिवार, जिसमें छोटे-छोटे बच्चे, माता-पिता, सुपुत्रों की भांति प्यारे सिक्ख और अंततः खुद को भी कुर्बान कर दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की हक-सच की लड़ाई में एक विस्मादी सृजना थी-- बाबा बंदा सिंघ बहादर। गुरु जी ने एक 'बैरागी' को 'सिंघ' सजाकर, लोगों को ज़ालिम राज्य से स्वतंत्रता दिलाने की प्रेरणा देकर पंजाब भेजा। गुरु जी से आशीर्वाद प्राप्त कर बाबा बंदा सिंघ बहादर ने भारत भू-खंड के एक हिस्से में खालसा राज्य को स्थापित कर खालसाई निशान झुला दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के कारनामों के आगे पूरा विश्व सिर झुकाता है। गुरु जी के प्रकाश-पर्व पर सारी दुनिया में बसते सिक्खों द्वारा उनको स्मरण करना एक अहम फर्ज़ है। गुरु जी का प्रकाश-पर्व जहां तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब में श्रद्धा-भावना से मनाया जाता है, वहीं जहां कहीं भी सिक्ख बसते हैं, वे भी बड़े अदब से मनाते हैं। हमें गुरु जी द्वारा किए गए ऐतिहासिक कार्यों को विशेष रूप से जानकर उनसे दिशा-निर्देश लेना चाहिए।



Final

# श्री गुरु हरिराय साहिब : जीवन परिचय

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्खों के सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म कीरतपुर साहिब में १९ माघ, सं. १६८६, तद्नुसार १६ जनवरी, सन् १६३० को हुआ। आपके पिता जी का नाम बाबा गुरदित्ता जी था। बाबा गुरदित्ता जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सबसे बड़े सुपुत्र थे। श्री गुरु हरिराय साहिब की माता का नाम माता निहाल कौर जी था। भिन्न-भिन्न इतिहासकारों ने इनकी माता जी के नाम भिन्न-भिन्न बताए हैं, जैसे माता अनंती जी, माता राज कौर जी। श्री गुरु हरिराय साहिब के बड़े भाई का नाम धीर मल था। वह अपनी कुटिल चालों व साज़िशों की वजह से शीघ्र ही सिक्ख पंथ से खारिज कर दिया गया था।

सातवें गुरु जी का बचपन कीरतपुर साहिब में ही व्यतीत हुआ। आप में कोमलता व प्यार जैसे ऊंचे गुण थे। एक बार बाग में सैर करते समय आपके कलियों वाले चोले से उलझकर पौधे की डाली से एक फूल टूटकर भूमि पर गिर गया। यह देख दादा जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सहजता से कहा, "बरखुरदार! चोला संभालकर चलना चाहिए।" फूल टूटकर मिट्टी में मिलने तथा दादा-गुरु की बातों का असर उनके कोमल मन पर ऐसा हुआ कि उन्होंने उम्र भर किसी का दिल तक न दुखाया। लोगों से बेइंतहा प्यार किया।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने पौत्र श्री (गुरु) हरिराय साहिब को कीरतपुर साहिब में रहते हुए अपनी छत्र-छाया में शिक्षित किया। उन्होंने भांप लिया था कि उनके बाद ये ही गुरगद्दी की जिम्मेदारी संभाल सकते हैं। यूं तो धीरमल भी स्वयं को इस योग्य समझता था, लेकिन उसका साज़िशी व दुनियादारी वाला स्वभाव रुकावट बन गया। ज्योति-जोत समाने से पहले श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ११ चेत्र, संवत, १७०१, तद्नुसार ८ मार्च, सन् १६४४ को गुरगद्दी की जिम्मेदारी श्री गुरु हरिराय साहिब को सौंप दी। गुरगद्दी पर बिठाने की रस्म बाबा बुड्ढा जी के वंशज ने निभाई।

सप्तम पातशाह जी ने पह ज़रूरी समझा कि जो सेना छठ्म पातशाह जी ने बनाई थी, उसे कायम रखा जाए। अत: उन्होंने २२०० सिक्खों की घुड़सवार सेना अपने पास रखी। वे अति कोमल हृदय वाले थे। शिकार खेलते समय भी वे शिकार को जीवित ही पकड़ते थे और उसे लाकर पशु-पक्षियों के लिए बनाए सुरक्षित स्थान पर छोड़ देते थे। असहाय प्राणियों की रक्षा करना, सदैव विनम्रतापूर्वक रहना . . . दरअसल ये दिव्य गुण होते हैं। उन्होंने कभी भी किसी पर आक्रमण नहीं किया था।

जब मालवा के क्षेत्र में सूखे की वजह से भुखमरी फैल गई, तब श्री गुरु हरिराय साहिब ने वहां लंगर चालू करवा दिए। किसी को भूख से मरने नहीं दिया। नगारा (नगाड़ा) बजाने की रीति भी उन्होंने ही शुरू की, ताकि दूर-दूर तक बैठी संगत आवाज़ सुनकर लंगर छकने

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

Final

हेतु आ सके।

उन्होंने तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रोगियों के उपचार हेतु शुरू किए गए दवाखाना को भी बदस्तूर जारी रखा तथा इसे और बड़े दवाखाने के रूप में विकसित किया। उनके पास शाही वैद्यों एवं हकीमों की दवाओं से भी बढ़िया दवाएं थीं। शाहजहां के चार पुत्र थे-- दारा शिकोह, शुजाह, औरंगज़ेब और मुराद। जब दारा शिकोह को औरंगज़ेब ने धोखे से शेर की मूंछ का बाल खिला दिया था, तब उसे कहीं से भी कारगर इलाज न मिला। शाहजहां के एक दरबान ने उसे बताया कि सिक्खों के सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब के दवाखाने में अति उत्तम औषधियां हैं। शाहजहां ने विनम्रत्रापूर्वक उस दरबान को भेजा और गुरु जी ने बिना किसी वैर-विरोध के ऐसी औषधि दी, जिसे खाकर दारा शिकोह पूर्ण स्वस्थ हो गया। फिर तो वह गुरु-घर का श्रद्धालु ही बन गया।

जब शाहजहां बीमार पड़ गया तो उसने अपना राज्य चार भागों में बांट दिया। जब गुरु जी बाबा बकाला साहिब और श्री गोइंदवाल साहिब के प्रचार-दौरे पर गए हुए थे, तब षड्यंत्रपूर्वक औरंगज़ेब ने शाहजहां को कैद कर लिया और दारा शिकोह भागकर गुरु जी की शरण में आ पहुंचा। उसने गुरु जी से विनती की कि औरंगज़ेब को दरिया ब्यास के घाट पर कुछ देर के लिए रोक लिया जाए, ताकि वह दरिया पार कर लाहौर पहुंच सके। गुरु जी ने क्रूर औरंगज़ेब को ब्यास के किनारे कुछ समय के लिए रोके रखा और दारा शिकोह लाहौर पहुंचने में सफल हो गया। औरंगज़ेब ने फिर भी उसका पिंड नहीं छोड़ा तथा उसे पकड़कर उसका क़त्ल कर दिया। बाद में जब ज़ालिम औरंगज़ेब को पता चला कि गुरु जी ने दारा शिकोह को बचाने के लिए उसकी सहायता की है तो वह नाराज़ हो गया। उसने गुरु जी को दिल्ली बुला लिया। गुरु जी ने उस पापी के माथे लगने से साफ इंकार कर दिया। संगत द्वारा बार-बार कहने पर उन्होंने अपने पुत्र रामराय को यह आदेश देकर भेजा कि अकाल पुरख के अलावा अन्य किसी का भय मन में नहीं लाना, सदैव सच पर पहरा देना और गुरु-घर के सिद्धातों की रखवाली करना।

रामराय ने दिल्ली में जाकर औरंगज़ेब द्वारा उठाए गए प्रश्नों के उत्तर दिए। उसकी संतुष्टि हो गई। रामराय अहं में आ गया। औरंगज़ेब ने करामात दिखाने के लिए कहा। गुरु जी के वचन भूलकर रामराय ने करामात दिखलानी शुरू कर दी। गुरु-पुत्र का काम छोड़ उसने मदारियों का काम करना आरंभ कर दिया। आखिर में काज़ियों के कहने पर औरंगज़ेब ने पूछा कि बाबा नानक जी ने यह क्यों लिखा है और इसका अर्थ क्या है? *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥"* रामराय डर गया। बोला कि पंक्ति वास्तव में *"मिटी बेईमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥"*

जब गुरु जी को पता चला कि रामराय ने गुरबाणी की पंक्ति बदली है तो वे बहुत नाराज़ हुए। उन्होंने संदेश भिजवा दिया कि रामराय कभी उनके माथे न लगे तथा कीरतपुर साहिब में न आए।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने सिक्खी के प्रचार के काम को ढीला न पड़ने दिया। जो कोई भी उनके दरबार में आता, उसे बांटकर खाने व सेवा अपनाने के लिए कहते। उन्होंने अन्य भी कई उपदेश सिक्ख संगत को दिए। भाई नंद लाल जी (ये सियालकोट के नज़दीक गलोटियां खुर्द में रहते थे और इन्हें नंद लाल पुरी कहा जाता था)

Final

ने उपदेश मांगा, तो गुरु जी ने फरमाया, "तुम तीन बातों को अपनाओगे तो धर्म तुम्हारे घर (हृदय) में रहेगा। पहली बात, टोपी नहीं पहननी; दूसरी बात, तम्बाकू नहीं पीना और तीसरी बात, कभी केश कत्ल नहीं करवाने।" भाई जी ने तीनों बातों को दृढ़तापूर्वक, निश्चयपूर्वक माना। लोग उन्हें 'धर्मी' यानि 'धर्मात्मा' पुकारने लगे। इन्हीं का पौत्र हकीकत राय था, जिसे ज़करिया खां ने शहीद किया था।

गुरु जी ने कई नए प्रचारक नियुक्त कर दूर-दूरस्थ इलाकों में भेजे। भाई सुथरे शाह को दिल्ली एवं भाई फेरू जी को राजस्थान की ओर प्रचार हेतु भेजा। एक सन्यासी भक्त भगवान को पूरब की ओर भेजा। कैथल तथा बागड़ियां ख़ानदानों के अगुआ (प्रमुख) भाइयों को मालवा क्षेत्र में प्रचार का काम सौंपा। दोआबा क्षेत्र में भी प्रचारक नियुक्त किए। श्री (आदि) गुरु ग्रंथ साहिब के कई स्वरूप स्वयं लिखवाकर तैयार करवाए। अपने हाथों मूल-मंत्र को पद-छेद कर लिखा, ताकि गुरबाणी पढ़ने व समझने में आसानी रहे। जब औरंगज़ेब सन् १६५८ में गद्दी पर बैठा, तब क्रूरतापूर्वक उसने इसलाम के अलावा अन्य धर्मों को खत्म करने की कोशिशें कीं। यह गुरु जी का प्रचार ही था कि सिक्ख निडर होकर उसके अत्याचारों का मुकाबला कर सके। माझा व दुआबा क्षेत्रों में तो बहुत पहले से ही सिक्खी का प्रचार हो रहा था, परंतु मालवा क्षेत्र में छठे पातशाह ने ही सबसे पहले चरण डाले थे। इस क्षेत्र में सप्तम पातशाह भी प्रचार हेतु आए।

प्रथम पातशाह जी से यह परंपरा रही है कि ज़ालिमों व पापियों के साथ मेल-मिलाप नहीं रखना है, उनके आगे झुकना नहीं है, बल्कि उन्हें सुधारना है। श्री गुरु नानक देव जी का घर आरंभ से ही सच, दया, प्रेम, आत्म-सम्मान, धर्म व स्वतंत्रता का उपदेश देता आया है। सप्तम पातशाह ने भी सिक्खी सिद्धांतों व उसूलों पर डटकर पहरा दिया। उनका औरंगज़ेब से न डरना, न ही रामराय के दिल्ली के बादशाह के साथ बने रसूख से डरना और न ही पुत्र-मोह की ममता से प्रभावित होना, यह सब श्री गुरु हरिराय साहिब के उच्च व भयरहित व्यक्तित्व को दर्शाने हेतु पर्याप्त है।

श्री गुरु हरिराय साहिब सदैव यह भी उपदेश देते थे कि अतिथि को पूर्ण सम्मान देना चाहिए, *"चूके समें (समय) अथितु जो आवै। कर भाउ भगत् तिस त्रित भुगावै।"* वे गुरबाणी का बहुत आदर करते थे।

उन्होंने यह भी फरमाया कि यकीन के घर में रहें। शुभ कर्म करें। किरत पवित्र, सच्ची रखें। किसी को बुरा न बोलें। किसी का दिल दुखाना पाप है। माता-पिता की सेवा ही भक्ति है। मानव देह दुर्लभ है। वाशनाओं व विकारों में पड़कर जीवन की बाज़ी मत हारें। प्रपंच त्यागें। साधसंगत संसार-सागर से पार जाने का जहाज़ है। दसवंध अवश्य निकालें।

यह तो सिद्ध हो चुका था कि रामराय गुरगद्दी के काबिल नहीं है, इसलिए श्री गुरु हरिराय साहिब ने गुरगद्दी अपने छोटे सुपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को देने का निर्णय कर लिया। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने सारी आवश्यक शिक्षा उनकी देख-रेख, निगरानी में प्राप्त की थी। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी की जिम्मेदारी सौंपने की। रस्म बाबा बुड्ढा जी के वंशज भाई झंडा जी द्वारा निभाई गई।

५ कार्तिक, संवत् १७१८, तद्नुसार ६ अक्तूबर, सन् १६६१ को सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब ३१ साल की आयु में ज्योति-जोत

*(शेष पृष्ठ १० पर)*

Final

# श्री गुरु हरिराय साहिब जी का व्यक्तित्व

-स. गुरदीप सिंघ*

श्री गुरु हरिराय साहिब जी के बारे में कनिंघम ने लिखा है-- "उनकी सारी कारजगुज़ारी में नम्रता भरी हुई थी।" लतीफ़ ने लिखा है-- "गुरु हरिराय साहिब शांतचित्त, प्रकृति-प्रेमी, संतोषी और मिष्टभाषी थे।"

ग्रीनलीज़ ने 'गोसपल ऑफ ग्रंथ साहिब' में श्री गुरु हरिराय साहिब की प्रशंसा करते हुए, उन्हें दया की मूरत कहते हुए लिखा है कि "उनके जैसा मेहमान-निवाज़ कोई नहीं था।"

श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के बड़े सुपुत्र बाबा गुरदित्ता जी के गृह में माता निहाल कौर जी की कोख से १९ माघ, संवत् १६८६ तदनुसार १६ जनवरी, सन् १६३० को शीश महल, कीरतपुर साहिब (ज़िला रोपड़) के पावन स्थान पर हुआ। आपका प्रकृति-प्रेम, आपकी कोमलता और शांतिप्रियता की साखियां विश्व-प्रसिद्ध हैं। एक दिन आप बगीचे में घूम रहे थे। आपने बहुत खुला-सा चोला पहन रखा था। हवा के एक झोंके से आपका चोला उड़ कर पौधों में उलझ गया, जिस कारण कुछ फूल डाली से टूट कर नीचे गिर गए। यह देखकर आपका कोमल हृदय बहुत दुखी हुआ। आप वहीं पौधों के पास खड़े हो गए और मन में विचारने लगे कि "ये सुंदर फूल टहनियों पर लगे हुए कितने सुंदर लग रहे थे! मेरे कारण ये टूटकर धरती पर जा गिरे हैं। फूलों, पौधों में भी जान है। सुंदरता का इस प्रकार मिट्टी में मिल जाना बहुत दुखदायी है।"

श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही लंगर की प्रथा चली आ रही थी। लंगर वितरित करने का निश्चित किया हुआ समय बीत जाने पर लांगरी लंगर बंद कर दिया करता था। श्री गुरु हरिराय साहिब ने हुक्म दिया कि "अतिथि या श्रद्धालु के आने का कोई समय नहीं होता। जब कोई लंगर छकने का चाहवान आए उसे परशादा तैयार करके छकाया जाए।"

श्री गुरु हरिराय साहिब ने बहुत बड़ा दवाख़ाना खोला, जिसमें प्राचीन एवं बहुमूल्य जड़ी-बूटियां उपलब्ध थीं। आप एक वैद्य के रूप में दीन-दुखियों और रोगियों को नि:शुल्क दवा देते तथा प्रभु-सिमरन के साथ जोड़ते।

मुगल बादशाह शाहजहां के चार पुत्र थे-- दारा शिकोह, शुजाह, औरंगज़ेब और मुराद। शाहजहां दारा शिकोह से बहुत प्यार करता था और उसे ही अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। दूसरी तरफ औरंगज़ेब गद्दी हासिल करना चाहता था। इसी कारण एक दिन औरंगज़ेब के कहने पर रसोइए द्वारा दारा शिकोह के खाने में शेर की मूंछ का बाल मिला दिया। उसके बाद दारा शिकोह बीमार रहने लगा। किसी भी प्रकार की दवा से उसे आराम न मिला। कई वैद्यों ने मिलकर मश्विरा करके उपाय बताया कि एक विशेष किस्म का लौंग, जिसका वजन एक माशा हो और एक विशेष किस्म की हरड़, जिसका वजन १४ माशा हो,

*३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०

यदि इन दोनों को मिलाकर दारा शिकोह को खिला दिया जाए तो वो बाल बाहर निकल आयेगा और दारा शिकोह स्वस्थ हो जायेगा। शाहजहां ने पूरे देश में विशेष किस्म का लौंग और विशेष किस्म की हरड़ लाने के लिए अपने चाकरों को भेजा पर ये चीज़ें कहीं से न मिलीं।

शाहजहां के दरबारी वज़ीर खां ने बताया कि उसे श्री गुरु हरिराय साहिब के एक सिक्ख से पता चला है कि ये दोनों वस्तुएं गुरु जी के पास हैं और आप गुरु जी से मांग लें। शाहजहां ने गुरु जी को पत्र लिखा कि उसे एक माशा वज़न लौंग और १४ माशा हरड़ की ज़रूरत है, जो आपके पास है। यदि आप यह भेज दें तो दारा शिकोह स्वस्थ हो सकता है। इसके साथ ही एक जगमोती (जो हाथी के सिर से निकलता है) भी अपने पास से भेज देना, मैं उसे देखना चाहता हूं। जब बादशाह का उमराव पत्र लेकर कीरतपुर साहिब आया तो गुरु जी ने तीनों वस्तुएं अपने दवाखाने से निकलवा कर दे दीं। शाहजहां इन दुर्लभ वस्तुओं को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। दारा शिकोह का इलाज शुरू किया गया और वह स्वस्थ हो गया।

जब शाहजहां के पुत्रों में दिल्ली के तख़्त के लिए खींचतान हुई तो दारा शिकोह औरंगज़ेब से डरकर लाहौर की ओर भागा। औरंगज़ेब ने उसका पीछा करने के लिए अपनी फौज उसके पीछे लगा दी। तब दारा शिकोह ब्यास दरिया पार करने से पहले श्री गुरु हरिराय साहिब की शरण में गोइंदवाल साहिब गया और विनती की कि कृप्या आप मेरे पीछे लगी हुई फौज को एक दिन के लिए रोक लें। शरण में आए ज़रूरतमंद की बांह थामनी गुरु-घर का पहला नियम रहा है। श्री गुरु हरिराय साहिब अपने २२०० जवान लेकर ब्यास दरिया के किनारे पहुंच गए और सभी किश्तियों को अपने कब्जे में कर लिया। इस प्रकार दारा शिकोह को (औरंगज़ेब की फौज रोकने का) दिया वचन भी पूरा किया, अमन भी भंग न होने दिया और न ही खून-खराबा हुआ।

शाहजहां को कैद करके और भाइयों को मार कर खुद औरंगज़ेब ने दिल्ली का तख़्त हासिल कर लिया। औरंगज़ेब कट्टर शिया मुसलमान था। उसने सोचा कि यदि सिक्खों के गुरु को मुसलमान बना लूं तो लाखों हिंदू-सिक्ख इसलाम को कबूल कर लेंगे, इसलिए तख़्त पर बैठने के बाद जल्दी ही गुरु जी को दिल्ली आने के लिए बुलावा भेजा। प्रमुख सिक्खों के साथ परामर्श करके श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने बड़े सुपुत्र रामराय को दिल्ली भेज दिया। गुरु जी ने अच्छी तरह ताकीद कर दी कि "वहां जो कुछ पूछा जाए निर्भय होकर सच कहना। परमात्मा पर भरोसा रखना, गुरबाणी और श्री गुरु नानक देव जी की विचारधरा के विपरीत कोई बात न कहना।" जब रामराय दिल्ली पहुंचा तो औरंगज़ेब ने पूछा कि आपके पिता ने दारा शिकोह की मदद क्यों की? रामराय ने उत्तर दिया कि "श्री गुरु नानक देव जी के घर में शुरू से ही यह रीति रही है कि जो भी शरण में आए उसकी हर संभव सहायता की जाए। श्री गुरु नानक साहिब का दर सबके लिए खुला है। दारा शिकोह की मदद पिता-गुरु जी ने इसी आशय से की न कि आपसे किसी प्रकार के द्वेष के कारण।" यह उत्तर गुरमति उसूलों के अनुकूल था, परंतु जो गुरमति उसूलों के अनुसार अनुचित था वो था रामराय द्वारा करामातें दिखाना। फिर एक दिन औरंगज़ेब ने कहा, "तुम्हारे ग्रंथ साहिब में यह क्यों लिखा है : मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्िआर ॥"

Final

"इसका क्या अर्थ है? क्या यह हमारे दीन की निंदा नहीं?" रामराय भय में आ गया और बादशाह को खुश करने के लिए श्री गुरु नानक देव जी के आशय से चूक गया। उसने कहा कि "यह लिखित में हुई गलती है। *'मिटी मुसलमान की'* नहीं बल्कि *'मिटी बेईमान की'* है।" बादशाह ने खुश होकर उसे दून का इलाका जागीर के रूप में दे दिया।

जब श्री गुरु हरिराय साहिब को पता चला तो उनको इस बात का बहुत दुख हुआ कि रामराय ने श्री गुरु नानक देव जी की बाणी को बदलकर उसका अपमान किया है। आपने फैसला करके रामराय से हर प्रकार के सम्बंध विच्छेद कर लिए और आदेश दिया कि "रामराय साडे मत्थे न लगे।" रामराय के व्यवहार और गुरु-घर की विरोधता के कारण आज भी गुरु के सिक्खों को रामराइयों के साथ रोटी-बेटी की सांझ न रखने का आदेश है।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपना ज्यादा समय गुरसिक्खी के प्रचार में व्यतीत किया। आप सिक्खी के आदर्शों, सिद्धांतों की व्याख्या करके सिक्खों की अशंकाओं को दूर करते। आपकी गुरुआई के समय सिक्खी बहुत दूर तक फैली।

जब श्री गुरु हरिराय साहिब ने जाना कि उनके सचखंड जाने का समय आ गया है तो उन्होंने अपने छोटे साहिबज़ादे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब का उत्तराधिकारी के रूप में चयन किया। सारी संगत को आदेश किया कि वो रामराय और गुरु-घर के विरोधियों के झांसे में न आए और श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को अपना गुरु माने। गुरगद्दी की जिम्मेदारियां श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को सौंप कर ५ कार्तिक, संवत् १७१८ तदनुसार ६ अक्तूबर, १६६१ ई को गुरु जी कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समा गए। गुरु जी के शरीर का अंतिम संस्कार सतलुज के किनारे पातालपुरी में किया गया। इस पावन स्थान का नाम गुरुद्वारा पातालपुरी साहिब है।

गुरु जी का संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा, सच का प्रचार करने में व्यतीत हुआ। परोपकार को जारी रखना, सरबत्त का भला करना, भूखों को भोजन देना, पेड़-पौधों की सुंदरता को बनाए रखना, जीव-जंतुओं की रक्षा करना, मानवता से प्यार करना, बाणी का सत्कार करना तथा नाम जपने का उन्होंने सभी को आदेश किया। 

## श्री गुरु हरिराय साहिब : जीवन परिचय

*(पृष्ठ ७ का शेष)*

समा गए। उन्होंने ९७ वर्ष गुरगद्दी की जिम्मेदारी को संभाला। उन्होंने सिक्ख धर्म की जड़ों को और भी मज़बूत किया। लंगर वितरित करते समय नगाड़ा बजाना, खड़े होकर अरदास करने का विधान, गुरबाणी का असीम सत्कार करना, प्रचार हेतु विशेष अभियान चलाना, पंथ को भावी ख़तरों के प्रति जागरूक करना, दिल्ली-दरबार के साथ पंथ के संबंधों के बारे में आदेश, खुशामद करने वालों को दुत्कार देना (बेशक वह बेटा ही हो) आदि अनेक साहसिक कार्य थे, जो उन्होंने किए। अन्य सिक्ख गुरु साहिबान की भांति उन्होंने वास्तविक एवं सच्चे, पवित्र धर्म-मार्ग से लोगों को परिचित करवाया, जिज्ञासुओं के चक्षु खोले और उनका मार्गदर्शन किया। 

# श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा लड़े गए युद्धों का वर्णन

*-डॉ. जगजीत कौर**

प्रतिदिन नित्तनेम-गुरबाणी पाठ के पश्चात गुरु-चरणों से जुड़कर गुरु का सिक्ख अरदास करता है और अंत में अपने गुरु दशमेश पिता द्वारा दिए गए हुकम को दोहराता है, जिसमें मंत्र रूप से वह सरबत्त के भले के कामना करता है और अपनी ऊर्ध्व मानसिकता, उच्च चढ़दी कला स्वरूप 'राज करेगा खालसा' की याचना करता है। संपूर्ण जगत पर राज्य करने के लिए उसका जूझना अनिवार्य है। यह जूझना अंतर्द्वंद्व है। अंदर और बाहर से उसके मनोबल को गिराने वाले विपरीत तत्त्वों से उसे जूझना है। प्रतिपल धर्म-युद्ध के लिए तत्पर रहना है। यही तो दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उसे खंडे-बाटे की पाहुल प्रदान करते हुए बताया, सिखाया और आदेश दिया। विश्व के जिस कोने पर भी असत्य, अन्याय, अनाचार और धक्केशाही व्याप्त रही होगी सिक्ख का हाथ अनायास ही अपने शस्त्र को जा स्पर्श करेगा और गुरु का सिक्ख अपने अंदर के संत को; अर्जित आत्म बल को शक्ति में परिणित कर अन्याय और अनाचार का विरोध करेगा। परम तेजस्वी, दुष्ट-दमन, अकाल पुरख परम-शक्ति के चरणों से जुड़े *"चित न भयो हमरो आवन कह ॥ चुभी रही स्रुति प्रभु चरनन मह ॥"* तप-रत मरद अगंमड़े ने अकाल पुरख जी से आदेश प्राप्त कर *"धरम चलावन संत उबारन ॥ दुसट सभन को मूल उपारन ॥"* हित पंथ की साजना की; कायर, दब्बू, भयभीत जन मानस के हाथों में शस्त्र पकड़ाए, जुल्म का टाकरा करना सिखाया और तब उसी भयभीत, दब्बू जनमानस ने वे करिश्मे कर दिखाए जो अपने आप में एक गौरवमयी गाथा बन प्रत्यक्ष हुए।

यद्यपि गौरव-गाथा का प्रारंभ श्री गुरु नानक देव जी के पावन उपदेशों से ही प्रारंभ हो गया था : *"जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥"* और *"पहिला मरणु कबूलि" . . . ॥" तथा "मरणु मुणसा सूरिआ हकु है ॥"* पंचम गुरुदेव जी की शहादत ने ही मरण-क्रीड़ा का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। मीरी पीरी के मालिक *"छठमु पीरु बैठा गुरु भारी"* ने शाहजहां की हुकूमत के समय चार भारी युद्धों में विजय हासिल कर खालसे के हौसले बुलंद कर दिए थे। इसकी परिणति में सिक्खों ने पराकाष्ठा को स्पर्श किया दसवें गुरुदेव जी के धर्म-युद्धों के काल में।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नेतृत्व में खालसा द्वारा लड़े गए युद्ध किसी राजसी लिप्सा से प्रेरित युद्ध नहीं थे, बल्कि उन पर ये युद्ध थोपे गए थे। इन युद्धों के माध्यम से उन्होंने अपने राज्य की कोई सीमा नहीं बढ़ाई, अन्य राज्यों का धन-वैभव एकत्रित नहीं किया, बल्कि इन युद्धों में तो उन्होंने अपने लख़्ते-जिगर कुर्बान किए, सरबंस को बलिवेदी पर चढ़ाया, जान से प्यारे शूरवीर सिक्खों का बलिदान दिया, केवल इसलिए कि *"जब आव की अउध निदान बनै अति ही रन मै तब जूझ मरों ॥"* जैसा कि कवि सेनापति 'स्री गुर सोभा' में बताते हैं :

*कलि मौ कलि धारि अकारि कीओ करि आपन दूत संघारन को।*

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

Final

*चमकी दिस चार हू जोत महा जग पाप समूह बिडारन को।*
*करि खालस जाप दए हरि ने हथिआर अपार जुझारन को।*
*गुरू गोबिंद सिंघ कीओ इतना भव सागर पार उतारन कौ। (अध्याय १३:५४९)*

कलयुग में अकाल पुरख ने अपनी संपूर्ण शक्ति प्रदान कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को पाप समूह का नाश करने के लिए भेजा, जिन्होंने खालसा के हाथ में हथियार पकड़ा जूझते हुए उसे भवसागर से पार उतार दिया।

हथियारों से मरजीवड़ा खालसा जूझा, भंगाणी से लेकर श्री मुकतसर साहिब की जंग में, चालीस मुकतों के रूप में इतिहास को स्वर्ण-चिन्ह प्रदान कर। हालांकि श्री गुरु गुबिंद सिंघ जी अगम्य शौर्य, मान व्यक्तिव के ज्योति-जोत समाने के बाद से आज तक खालसा जूझता आया है और अपने प्रिय दशमेश जी द्वारा बताए मार्ग पर चलकर शहादतों-कुर्बानियों और बलिदानों का स्वर्णिम इतिहास रचता आया है केवल एक मात्र पंथ की चढ़दी कला और केसरी निशान की अखंड उन्मुक्त उड़ान को बरकरार रखने के लिए पंथ-द्रोहियों को सबक सिखाने और धक्केशाही का विरोध करने की जो युद्ध-नीति दशमेश जी ने बनाई खालसा उन्हीं पद-चिन्हों पर चलता रहा। युद्ध के सर्वप्रथम नगाड़े बजे पवित्र पाउंटा साहिब की धरती के भंगाणी नामक स्थान पर।

गुरुदेव जी का मकसद ज़ालिम सत्ता के जुल्मों से देशवासियों को मुक्त कराना था। उन्होंने अपना यह मकसद श्री अनंदपुर साहिब के आस-पास के पहाड़ी राजाओं और पुनः पाउंटा साहिब आकर बिलासपुर के राजा भीम चंद और अन्य पहाड़ी राजाओं को भी स्पष्ट कर दिया था, पर वे बजाय गुरु जी के साथ होने के गुरु जी से ही शत्रुता करने लगे। ईर्ष्यावश वे सब एक होकर गुरु जी से ही युद्ध ठान बैठे। पीर बुद्धू शाह ने ५०० पठान गुरु-सेना में भर्ती कराए। राजाओं द्वारा आक्रमण की बात सुन वे सभी पठान शत्रु-पक्ष से जा मिले। गुरु के सिक्खों ने ऐसा शौर्य-प्रदर्शन किया कि शत्रु पक्ष कांप उठा। यद्यपि युद्ध तो थोपा गया था, जिसका वर्णन गुरु साहिब ने बचित्र नाटक में करते हुए कहा है :

*फतेसाह कोपा तबि राजा ॥*
*लोह परा हम सो बिनु काजा ॥३॥८॥*
*(बचित्र नाटक)*

पीर बुद्धू शाह को जब पठानों के भाग जाने का पता चला तो वे अपने पांचों पुत्रों और अनेक साथियों सहित आ पहुंचे। बीबी वीरो जी (छठम गुरुदेव जी की पुत्री, गुरु दशमेश जी की बूआ) ने अपने पांचों पुत्र जंग को भेजे। बीबी वीरो के पांच पुत्रों-- भाई जीत मल, भाई संगो शाह, भाई गुलाब चंद, भाई माहरी लाल चंद, और भाई गंगाराम ने वह वीरता का प्रदर्शन किया कि विरोधी सेना को जीतकर तामा बना दिया। गुरुदेव जी के शब्दों में :

*तहां साह स्रीसाह संग्राम कोपे ॥*
*पंचो बीर बंके प्रिथी पाइ रोपे ॥*
*हठी जीतमल्लं सु गाजी गुलाबं ॥*
*रणं देखीऐ रंग रूपं सहाबं ॥*
*हठियो माहरीचंदयं गंगरामं ॥*
*जिनै कितयं जितीयं फौज तामं ॥*
*कुपे लालचंदं कीए लाल रूपं ॥*
*जिनै गज्जीयं गरब सिंघं अनूपं ॥४॥८८॥*
*(बचित्र नाटक)*

कैसा विचित्र युद्ध हो रहा है! गुरु पक्ष के प्रशिक्षित सैनिक नहीं हैं। उनके पास पर्याप्त अस्त्र-शस्त्र भी नहीं हैं। फिर भी शत्रुओं को धराशायी किए जा रहे हैं। और देखिए, मामा

Final

किरपाल दास उदासी महंत हाथ में अपना डंडा लेकर भागे और हयात खां के सिर पर पूरी शक्ति से ऐसा प्रहार किया कि उसकी खोपड़ी से रक्त मज्जा की धार प्रवाहित हो उठी। मानो श्रीकृष्ण ने मक्खन की मटकी फोड़ दी हो :

*क्रिपाल कोपियं कुतको संभारी ॥*
*हठी खान हय्यात के सीस झारी ॥*
*उट्ठी छिच्छ इच्छं कढा मेझ जोरं ॥*
*मनो माखनं मट्टकी कान्ह फोरं ॥*

*(बचित्र नाटक)*

राजा हरीचंद बड़ा जांबाज तीरंदाज़ था। उसका बाण जिसे लगता आर-पार हो जाता। गुरुदेव जी को भी उसने निशाना बनाया। पहला तीर घोड़े को छूकर निकल गया, दूसरा कान को छूता, पर तीसरे तीर की हल्की सी नोंक जब पेटी को छूती निकल गई तब *"जबै बाण लाग्यो ॥ तबै रोस जाग्यो ॥ करं लै कमाणं ॥ हनं बाण ताणं ॥"* और बाणों की ऐसी वर्षा की कि *"हरीचंद मारे ॥ सु जोधा लतारे ॥"* दुश्मन भाग निकले और तब *"भई जीत मेरी ॥ क्रिपा काल केरी ॥"* युद्ध में भाई संघो शाह शहीद हुआ। पीर बुद्धू शाह के पुत्र भी शहीद हुए। अन्य कई वीर सूरमे शहीद हुए। बूटे शाह के अनुसार फसाद की जड़ हरीचंद हडूरिआ जंग में मारा गया--*"हरी चंद हडूरिआ कि बाइस फितना व फसाद शसह बूद नीज़ कुसता आमद।" (तारीखे-बूटे शाह)* यह जंग २३ सितंबर, १६८८ ई को हुई, जिसने एक नया पन्ना सिक्ख इतिहास में जोड़ा। सिक्खों का हौसला बुलंद हुआ, युद्ध-कला में निखार आया।

मूल रूप से संत स्वभाव सिक्ख लड़ना नहीं चाहते। व्यर्थ का रक्त बहाना उनका किरदार नहीं है, पर आत्मसम्मान की रक्षा हित तो शस्त्र उठाना ही होता है। भंगाणी के युद्ध के बाद गुरुदेव श्री अनंदपुर साहिब वापिस आ टिके। गुरु का प्रताप दिनो-दिन बढ़ रहा था। यहां तक कि पहाड़ी राजाओं ने भी इस प्रताप की आढ़ में मुगलों को कर-लगान देना बंद कर दिया तो मुगल सत्ता ने अलफ खां के नेतृत्व में पहाड़ी राजाओं को सोधने के लिए सेना भेजी। पहाड़ी राजाओं के निवेदन पर गुरु जी ने सिंघों को उनकी सहायता को भेजा। मार्च, १६९४ ई में नादौण नामक स्थान पर सिंघों के शौर्य, साहस के सामने अलफ खां टिक नहीं सका और भाग निकला।

यद्यपि मुख्य रूप से भीम चंद ही मुगलों का निशाना था। सिंघों की सहायता से वह जीत तो गया पर मन ही मन भयभीत हो गया। सिंघों की बढ़ती शक्ति उसके भय का कारण थी। सन् १६९६ ई के प्रारंभ में मुगल सेना ने फिर पहाड़ी राजाओं से टक्कर ली। इस बार हुसैन ख़ान को भेजा गया। भीम चंद हुसैन खां से जा मिला पर गुरु के सिंघों ने हुसैन खां का काम तमाम कर दिया। इसे 'हुसैनी युद्ध' कहा जाता है जिसमें गुरु के सिंघों की फिर जीत हुई। रणजीत नगाड़े पर विजय की धुनें बजने लगीं।

१६९९ ई को वैसाखी के दिन विश्व-इतिहास को पटल पर एक करिश्मा हुआ, जिसमें गुरुदेव ने खंडे-बाटे की पाहुल तैयार कर खालसा पंथ की साजना कर गीदड़ों को शेर बनाया। कायर, डरपोक, दबे-घुटे लोगों को अमृत छकाकर मौत से बेखौफ कर दिया। सिक्खों के हौसले भी और बुलंद हुए। वो और भी चढ़दी कला में विचरने लगे। अब मुगल और पहाड़ी राजे और भी भयभीत हो गए। गुरु जी जानते थे कि भविष्य में बड़ा टाकरा होना है। इसके लिए इधर भी तैयारियां होने लगीं। पांच बड़े किलों का ऊंचा-सुरक्षित स्थान देख निर्माण किया गया। अमृत के घूंट पी, शस्त्रधारी बन अपनी विशेष पहचान "साबत सूरत दसतार

Final

सिरा" से खालसा बेखौफ घूमने लगा। टक्कर होनी स्वाभाविक थी, अत: हंडूर के राजा रूप चंद के बहकाने पर सारे पहाड़ी राजा फिर इकट्ठे हो आए और श्री अनंदपुर साहिब को घेरे में लेने का प्रयास करने लगे। १७०४ ई को श्री अनंदपुर साहिब की पहली जंग हुई। इसमें साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी, जिनकी आयु सिर्फ १४ वर्ष थी ने वो हाथ दिखाए कि पहाड़ियों के छक्के छूट गए। अब श्री अनंदपुर साहिब का किला तोड़ने को मस्त हाथी को भेजा गया। गुरुदेव से थापड़ा लेकर भाई बचित्तर सिंघ ने हाथी के मस्तक पर नागनी से ऐसा प्रहार किया कि वह उल्टे पांव अपनी ही सेना को लताड़ता-कुचलता हुआ भागा। शत्रु सेना में हाय-तौबा मच गई। अब पहाड़ी राजा अजमेर चंद ने सरहिंद के नवाब से सहायता मांगी। मुगलों की विशाल वाहिनी और पहाड़ियों की सम्मिलित सेना ने श्री अनंदगढ़ किले को फिर घेर लिया। १७०४ ई में श्री अनंदपुर साहिब का दूसरा बड़ा युद्ध हुआ। सिंघों ने खूब बहादुरी का प्रदर्शन किया। तीन दिन के घमासान युद्ध में मुगलों का बहुत नुकसान हुआ। इसी युद्ध में भाई घनईया जी दुश्मनों को भी पानी पिलाते रहे। सिक्खों ने शिकायत भी की, पर गुरुदेव से बख़्शिश प्राप्त कर वे सेवा पंथ के सिरमौर सेवक बने। सिक्ख रेड क्रास का जन्म इसी युद्ध में हुआ।

तीन दिन के घमासान युद्ध में जब मुगलों का भारी नुकसान हुआ तो उन्होंने सोचा कि लड़कर वे जीत नहीं सकते, अत: युद्ध रोक उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब और किलों को घेर लिया। खाद्य-सामग्री का बाहर से आना बंद हो गया। पानी का बहाव भी अजमेर चंद ने दूसरी ओर कर दिया। किले में पानी की किल्लत हो गई। मुंह अंधेरे प्रात:-सायं कुछ सिंघ बाहर निकलते, खाने-पीने का जुगाड़ करते, दो-चार शहीद होते, कुछ सामान लाने में कामयाब होते। अब सिंघों की संख्या भी घटने लगी। कुछ सिंघ तो 'बेदावा' लिख गुरुदेव को छोड़कर चले गए। अब पहाड़ी राजाओं ने गाय की क़सम ले, मुगलों ने कुरान की कसम ले किला खाली कर श्री अनंदपुर साहिब छोड़ जाने की प्रार्थना की। सिंघों के कहने पर गुरु जी ने किला छोड़ने का निश्चय किया, जब कि वे जानते थे कि सब क़समें-वायदे झूठे हैं। और हुआ भी वही जैसा गुरुदेव जी का अनुमान था। परिवार और जरूरी सामान सहित गुरुदेव अभी सरसा नदी के किनारे पहुंचे ही थे कि शत्रु दल की सम्मिलित सेना ने शाही टिब्बी के पास अचानक हमला कर दिया। भाई उदै सिंघ ने कुछ बहादुर सिंघों के साथ इस सेना को रोके रखा। भयानक युद्ध हुआ, जिसमें भाई उदै सिंघ और लगभग सभी वीर बहादुर शहीद हुए। गुरुदेव सरसा नदी को पार करते समय अपने परिवार से बिछुड़ गए; अमूल्य साहित्य और सामग्री नदी में बह गई। परिवार तितर-बितर हो गया। बड़ी कठिनता से ४० सिंघ और गुरुदेव अपने दो बड़े साहिबज़ादों-- बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी के साथ चमकौर की एक कच्ची गढ़ी में पहुंचे।

अब चमकौर की गढ़ी में संसार का वह विचित्र युद्ध शुरू हुआ जिसमें एक ओर थके-मांदे, भूख-प्यास से विह्वल ४० सिंघ और दूसरी ओर दस लाख की सेना, लेकिन फिर भी संसार के इतिहास में वे ४० सिंघ मिसाल कायम कर गए। सन् १७०४ ई की दिसंबर माह की भयानक हिम शीत तूफान भरी रात और साधनहीन चालीस सिंघ कच्ची गढ़ी में पहुचे। गुरुदेव आप गढ़ी के ऊपर बैठ गए मोर्चा बांध लिया। पांच-पांच सिंघ बाहर निकलते, युद्ध-कौशल दिखा हज़ारों को मार शहीद हो जाते।

इसी युद्ध में गुरुदेव जी के बड़े साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ जी कृपाण, नेजे, तीर के करिश्मे दिखा शहीद हुए और फिर बाबा जुझार सिंघ जी ने दुश्मनों को हाथ दिखाए। इस युद्ध का बयान गुरुदेव जी ने स्वयं 'जफ़रनामा' (विजय का पत्र) में किया है। ऐसी असंतुलित लड़ाई में अकेली वीरता भी आखिर क्या कर सकती है, जब कि केवल ४० बंदों पर अचानक बेशुमार फौज चढ़कर आ पड़े! फिर भी दिन की लड़ाई तब बंद हुई जब दुनिया का दीपक (सूर्य) अपना मुंह छिपा चुका था और रात का राजा (चंद्रमा) पूरी सज-धज के साथ निकल आया था। यानि कि मुट्ठी भर सिंघ पूरा दिन बेशुमार फौजों का मुकाबला करते रहे। दोनों साहिबज़ादों के शहीद हो जाने पर पिता-गुरु रंचमात्र भी विचलित नहीं हुए, बल्कि अकाल पुरख का शुक्राना किया :

*मुझ पर से आज तेरी अमानत अदा हुई।*
*बेटों की जान धर्म की खातिर फिदा हुई।*
*(योगी अल्ला यार खां)*

आखिर जब चालीस में से केवल पांच सिंघ बचे रह गए, तो उन पांच सिंघों ने गुरमत्ता पास कर आदेश दिया कि यदि गुरुदेव बचे रहे तो पंथ पुनः संगठित हो जाएगा, इसलिए उन्हें तुरंत गढ़ी छोड़कर चले जाना चाहिए। प्रातः गुरुदेव अपने हमशक्ल भाई संगत सिंघ को अपनी दसतार व सर पर सजी कलगी देकर बुलंद आवाज़ में हाथ से ताली बजाते हुए विदा हुए। तीन बार कहा : *"मैं गढ़ी छोड़कर जा रहा हूं।" "गोबिंद सिंघ मे रवद।"* अंधेरे में मुगलों को कुछ समझ नहीं आया, भगदड़ मच गई, पर गुरु साहिब भाई दइआ सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी और भाई मान सिंघ जी को ले अलग-अलग दिशाओं की ओर चल पड़े। नंगे पांव थके-मांदे गुरुदेव माछीवाड़े के जंगलों में कुएं की टिंड का तकिया बना विश्राम करने लगे। वहां भाई गुलाबा इन्हें अपने घर ले गया। यहां से जटपुरा, रायकोट होते हुए दीना (कांगड़) पहुंचे। यहां 'जफ़रनामा' लिख भाई दइआ सिंघ को दक्षिण भेजा। दीना अधिक देर तक नहीं ठहरे। कोटकपुरा आए। यहीं उन्हें वे चालीस वीर सिंघ मिले। उन्होंने बताया कि वज़ीर खां सरहिंद से भारी सेना लेकर चला आ रहा है। गुरुदेव जी के साथ यहां माझा-मालवा के कई अन्य बहादुर सिंघ भी आ मिले। माता भाग कौर (भाई भागो जी) अपनी स्त्रियों की कमान ले जत्था तैयार कर चल पड़ीं। खिदराणे की ढाब एक टीला था, जिसके निकट पानी की ढाब थी, आस-पास जंगल-झाड़ियां थीं, गुरुदेव जी ने इसी को अपना युद्ध का केंद्र बनाया। स्वयं टीले के ऊपर गुरुदेव जी ने मोर्चा बांध लिया। माझा-मालवा के जांबाज़ जवानों की सेना सामने से मुगलों का सामना करती रही। मुगलों पर दोहरी मार पड़ी। ऊपर टीले से गुरुदेव के तीर, जिनका निशाना अचूक होता, सामने से सिंघों की चमकती शमशीरों, नेजों-बरछों के वार। दुश्मनों के पैर उखड़ने लगे। प्यास के मारे हाल-बे-हाल, पानी की ढाब तक वे पहुंच नहीं सकते थे। भारी नुकसान करवाकर आखिर भाग निकले। इसी युद्ध में वे चालीस वीर सूरमगति को प्राप्त हुए जो श्री अनंदपुर साहिब से आ गए थे। गुरुदेव जी ने इन्हें प्यार दिया; सत्कार से इन्हें पांच हज़ारी, दस हज़ारी आदि की बख़्शिश की। भाई महां सिंघ ने बेदावा फाड़ने की प्रार्थना की और गुरु जी की गोद में अंतिम सांस लीं। गुरु जी ने सजल नेत्रों से बेदावा फाड़ा। चालीस सिंघों को 'चालीस मुकते' घोषित किया। एक साथ उनका अंतिम संस्कार किया। पावन स्थान 'श्री मुकतसर साहिब' कहलाया। श्री मुकतसर साहिब का युद्ध गुरुदेव जी द्वारा लड़ा गया अंतिम युद्ध था।



Final

# श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : क्रांतिकारी के रूप में

-डॉ. परमजीत कौर*

अद्वितीय व्यक्तित्व के स्वामी, दुष्ट-दमन, उच्च कोटि के सेनानायक, सक्षम समाज-सुधारक, श्रेष्ठ क्रांतिकारी, त्याग तथा बलिदान की मूर्ति, नौ वर्ष की आयु में अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को शहादत के लिए भेजने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म पटना शहर में २३ पौष, सं. १७२३ तद्नुसार २२ दिसंबर, सन् १६६६ को हुआ। आप जी के जन्म के समय श्री गुरु तेग बहादर साहिब बंगाल के ढाका शहर में थे। सन् १६७० में श्री गुरु तेग बहादर साहिब का मिलाप श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ हुआ। छोटी आयु में ही आप जी में नेतृत्व के गुण प्रकट होने लगे थे। जब आप अपने साथियों के साथ खेलने के लिए निकलते थे तो स्वत: ही बालकों का सारा समुदाय आपको अपना सरदार मान लेता था। बचपन से ही आप जी में शूरवीरों वाली रुचि दिखायी देने लगी थी। आप अपने साथियों को दो टोलियों में विभाजित कर परस्पर युद्ध करवाते थे। सन् १६७४ में कश्मीरी पंडितों द्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समक्ष औरंगज़ेब के अत्याचार के विरुद्ध फरियाद करने पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी आत्मिक उच्चता का प्रमाण दिया। आप जी ने सहमी हुई हिंदू जनता को भय से मुक्त करने के लिए अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को कुर्बान होने के लिए भेज दिया। जब औरंगज़ेब के आदेश से श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद किया गया तो आपकी आयु लगभग नौ वर्ष थी।

धर्म प्रचार का कार्य-क्षेत्र बढ़ाने के लिए तथा ब्राह्मणों के आधिपत्य को समाप्त करने के लिए गुरु जी ने सिक्खों को संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। पंडित रघुनाथ दास के पास पांच सिक्खों को संस्कृत पढ़ने के लिए भेजा। उन सिक्खों में कोई भी ब्राह्मण वर्ण का न होने के कारण पंडित ने विद्या देने से इंकार कर दिया। गुरु जी के विचार क्रांतिकारी थे। संस्कृत पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मणों का है, इस अवधारणा का खंडन करते हुए आप जी ने पांच सिक्खों को उदासी वस्त्र पहनाकर बनारस संस्कृत पढ़ने के लिए भेज दिया। वहां वे कई वर्ष तक संस्कृत पढ़ते रहे। अमृत की दीक्षा लेने के बाद उनके नाम भाई राम सिंघ, भाई करम सिंघ, भाई गंडा सिंघ, भाई वीर सिंघ तथा भाई शोभा सिंघ वर्णित हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन का मुख्य उद्देश्य लोगों में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें जुल्म, अत्याचार तथा बुराइयों के विरुद्ध डटकर मुकाबला करने के योग्य बनाना था; उनके जीवन में इंकलाब लाना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें कई युद्ध लड़ने पड़े, क्योंकि मुगलों के साथ-साथ हिंदू (ब्राह्मण, क्षत्रिय) भी आपके उद्देश्य को न समझने के कारण आपके विरुद्ध हो गए थे तथा मुगल ताकत के साथ मिल गए थे। वे यह सोचने लगे थे कि

*६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा); मो. ९८१२३-५८१८६

Final

सिक्खी के फलने-फूलने से उनके अधिकार समाप्त हो जायेंगे।

अपने दादा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पद-चिन्हों पर चलते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शस्त्र-विद्या तथा घुड़सवारी की ओर सिक्ख नौजवानों की रुचि पैदा की। अनेक नौजवान श्री अनंदपुर साहिब में एकत्र होने शुरू हो गये। वीर रस पूर्ण कविताओं से नौजवानों में उत्साह पैदा किया जाता था। १६८२ ई में गुरु साहिब ने रणजीत नगाड़ा तैयार करवाया। इस नगाड़े पर चोट लगने पर नौजवान आलस्य त्यागकर जोश से भर जाते थे।

अक्तूबर, सन् १६८४ में जब गुरु साहिब श्री अनंदपुर साहिब से चले तो उनके साथ ५२ विद्वान कवि तथा ५०० के करीब शस्त्रधारी सिक्ख थे। औरंगज़ेब को खुश करने के लिए पहाड़ी राजाओं द्वारा गुरु साहिब पर आक्रमण करने के कारण भंगाणी का युद्ध हुआ, जिसमें सारे पहाड़ी हिंदू राजाओं की फौज उन साधारण लोगों से पराजित हो गयी जिनको वे सदियों से दबाते आ रहे थे। इस युद्ध ने सरहिंद तथा दिल्ली के सरकारी क्षेत्रों में हलचल मचा दी। दबे-कुचले एवं सहमे हुए लोगों की वीरता ने ब्राह्मणों तथा हिंदू रजवाड़ों की नींद उड़ा दी। जनता की जागृति मुगल ताकत को खतरे की घंटी प्रतीत होने लगी। सिक्ख जत्थेबंदी को मज़बूत करने के लिए गुरु साहिब ने शस्त्रों के निर्माण-कार्य को भी प्रारंभ करवा दिया।

सिक्खों को होली के रंगों तथा उससे जुड़ी कुरीतियों से हटाकर शस्त्र-विद्या के अभ्यास में लगा दिया। होली को होला का रूप देकर उन दिनों तीर तथा तेग के मुकाबले करवाये जाने लगे। होली के पुरातन संस्कारों के स्थान पर शबद-कीर्तन के रंग भर दिए।

अत्याचार को जड़ से समाप्त करने के लिए एक ऐसी कौम को तैयार करने का फैसला किया, जिसके हृदय में परमात्मा का प्रेम, आश्रय रहित लोगों के लिए दया की भावना तथा हाथों में जुल्म व अत्याचार का मुकाबला करने के लिए हथियार हो; जो जुल्म को समाप्त करने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगाने की हिम्मत रखती हो। इसके साथ ही सिक्ख कौम के आचार को ऊंचा रखने के लिए उनके जीवन को मर्यादित करने का फैसला किया।

सिक्ख संगत को सन् १६९९ में वैसाखी वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब में एकत्र होने के लिए विशेष रूप से निमंत्रण भेजे गए। हज़ारों की संख्या में स्त्री-पुरुष श्री अनंदपुर साहिब में पहुंच गए। खुले मैदान में दीवान सजाया गया। गुरु साहिब ने भरे दीवान में पांच सिरों की मांग की। शीश अर्पण करने वालों को शीश तली पर रखने का मतलब समझाया कि गुरु की मति पर चलकर उच्च आचरण बनाना तथा अपने स्वार्थ के लिए जीने के स्थान पर दूसरों के लिए जीने की भावना पैदा करना ही सिर हथेली पर रखना है। उन मरजीवडों के जाति-वर्ण के भेद को मिटाकर उन्हें एक ही बाटे में से अमृत छकाकर यह आदेश दिया कि अमृतधारी सिक्ख अपने नाम के साथ 'सिंघ' शब्द अवश्य लगाएं। सर्वप्रथम अमृत-पान करने वाले पांच सिक्ख पांच प्यारे कहलाए। इस प्रकार अमृत की अमूल्य दात देकर खालसा पंथ की सृजना की तथा समझाया कि जात-पात, भेदभाव, मेर-तेर, नफ़रत, संकीर्णता, भ्रम, पाखंड, लोकाचार आदि का खालसे के जीवन में कोई स्थान नहीं हैं :

*खालस खास कहावै सोई।*
*जा के हिरदे भरम ना होई।*
*भरम भेख ते रहै निआरा।*

Final

*सो खालस सतिगुरू हमारा ॥ (स्री गुर शोभा)*

गुरु जी ने खालसे का सीधा सम्बंध परमात्मा से जोड़ दिया और कहा कि खालसा अकाल पुरख की फौज है :

*खालसा अकाल पुरख की फौज।*
*प्रगटिओ खालसा परमातम की मौज।*
*(सरब लोह ग्रंथ)*

खालसे की जीत अकाल पुरख की जीत है। यह बात सदैव याद रहे इसलिए आदेश दिया कि एक-दूसरे से मिलते समय *'वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फ़तहि'* बोलकर अभिवादन करें। यह मानवता के इतिहास में एक कांतिक्रारी युग का आरंभ था। अमृत की दात देकर सिक्खों के अंदर स्वाभिमान, निडरता तथा आत्मविश्वास की भावना पैदा करके उनकी कायाकल्प कर दी; उन्हें जीवन जीने का नया ढंग सिखाया।

खालसा पंथ की सृजना के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पांच प्यारों से स्वयं अमृत की दात प्राप्त की तथा खालसे के साथ अपनी अभेदता प्रकट की। संसार के किसी भी धर्म में किसी गुरु, पैगंबर, पीर आदि ने अपने शिष्य, चेले या मुरीद के साथ ऐसी अभेदता प्रकट नहीं की। भाई गुरदास सिंघ जी का फरमान है :

*वह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा वरीआम इकेला।*
*वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥*
*(वार ४१:१७)*

आपने खालसे को अपना इष्ट, मित्र, सखा, सज्जन आदि कहकर सम्मान ही नहीं दिया बल्कि उसे अपना रूप स्वीकार किया :

*खालसा मेरो रूप है खास।*
*खालसे महि हौं करौं निवास।*
*खालसा मेरो मुख है अंगा।*
*खालसे के हौं सद सद संगा।*
*खालसा मेरो इषट सुहिरद।*
*खालसा मेरो कहीअत बिरद।*
*खालसा मेरो पछ अर पाता।*
*खालसा मेरो सुख अहिलादा। (सरब लोह ग्रंथ)*

हिंदू समाज ब्राह्मणों का मोहताज बना रहता था। कर्मकांड के जाल में फंसा हुआ वह धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों के समय ब्राह्मणों की सेवा एवं पूजा करने के लिए बाध्य था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के द्वारा अमृत छकाये जाने से तथा उनके उपदेशों से प्रभावित होकर उन लोगों के जीवन में कांतिक्रारी परिवर्तन आया। उनका मन जागृत हो गया, वर्णगत भेदभाव मिट गया। वे ब्राह्मणों द्वारा फैलाए गए भ्रम-जाल से बाहर निकलने लगे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समझाया कि सेवा उनकी करनी चाहिए जो देश, कौम तथा मानवता के हित में स्वयं को अर्पण कर दें। गुरु जी ने जनता को प्रबुद्ध करने के लिए स्वयं बाणी रची तथा सुचेत किया कि परमात्मा किसी विशेष स्थान आदि पर नहीं है, परमात्मा तो प्रत्येक स्थान पर है, सर्वव्यापक है। यह सारा संसार कूड़-क्रिया में उलझा हुआ है। कोई पत्थरों को पूजा के लिए साथ लिए फिरता है, कोई बुतों को परमात्मा समझकर पूज रहा है, तो कोई कब्रों को पूजने के लिए जा रहा है :

*काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंग गरे लटकाइओ ॥*
*काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाह को सीसु निवाइओ ॥*
*कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ म्रितान को पूजन धाइओ ॥*
*कूर क्रिआ उरझिओ सभही जग स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥ (सवैये)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरसिक्खों को ताकीद की कि जब तक गुरु का सिक्ख पाखंड

Final

से रहित है, व्यर्थ की रीतियों-कुरीतियों से बचा हुआ है, तब तक वह खालसा है, मेरा सिक्ख है। पाखंड में फंसे हुए सिक्ख में मेरा विश्वास नहीं है :

*जब लग खालसा रहे निआरा।*
*तब लग तेज दीओ मैं सारा।*
*जब इह गहै बिपरन की रीत।*
*मै न करों इन की प्रतीत। (सरब लोह ग्रंथ)*

अवगुणों से दूर करने हेतु गुरु साहिब ने खालसा के लिए खालिस-पवित्र जीवन जरूरी बताया। अमृतधारी रहित मर्यादा का पालन करने वाले, पवित्रता की मूर्ति, छल-कपट से रहित, विकारों से हीन, पाखंड-विरोधी, प्रभु-प्रेम में रंगे हुए व्यक्तित्व का नाम ही खालसा है :

*जागत जोति जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै ॥*
*पूरन प्रेम प्रतीति सजै ब्रत गोर मढ़ी मठ भूल न मानै ॥*
*तीरथ दान दया तप संजम एकु बिना नहि एक पछानै ॥*
*पूरन जोति जगै घट मै तब खालिस ताहिं न खालिस जानै ॥५७॥*

गुरु जी ने हीन-भाव से ग्रस्त लोगों को जगाया तथा समझाया कि सबकी एक ही जाति है। सारे केवल मनुष्य हैं। सबकी शक्ल अलग-अलग है, देश, वेश तथा बोली अलग है, पर रूप सबका एक-सा है, एक जैसी आंखें हैं, एक जैसे कान हैं, एक-सा शरीर है तथा शरीर के अंदर एक ही परमात्मा की ज्योति है, फिर भिन्न-भेद कैसा ?

*हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी*
*मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥*
*करता करीम सोई राजक रहीम ओई*
*दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ॥ . . .*
*एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान*
*खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥*
*अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई*
*एक ही सरूप सभै एक ही बनाउ है ॥*
*(अकाल उसतति)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लोगों को मानसिक गुलामी से आज़ाद कराने के साथ-साथ उन्हें सदा चढ़दी कला में रहना सिखाया तथा *"निसचै कर अपनी जीत करों"* का मंत्र दृढ़ करवाया।

प्रसिद्ध विद्वान गार्डन के शब्दों में-- "जनता के मुर्दा ढांचे में जीवन की नई लहर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के उपदेशों ने डाली। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में धार्मिक नेता, शहंशाह, बलवान् योद्धा तथा उच्च नीतिवान वाले सारे गुण मौजूद थे।" (जीवन-बिरतांत श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी, प्रो. साहिब सिंघ, पृष्ठ २२७)

ख़ालसा पंथ की सृजना के बाद एक ऐसी मज़बूत जत्थेबंदी बन गयी जो तथाकथित उच्च जाति के लोगों तथा अत्याचारी राजाओं की आंखों की किरकिरी प्रतीत होने लगी तथा उसे तोड़ने के यत्न आरंभ हो गये। किसी न किसी बहाने से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ युद्ध किये गए पर गुरु सहिब की ओर से कभी भी पहला कदम नहीं उठाया गया, क्योंकि गुरु जी कोई अलग राज्य कायम करना नहीं चाहते थे और न ही किसी क्षेत्र या वस्तु पर कब्ज़ा करना उनका मंतव्य था। यही कारण था कि मुगल फौज के कई जरनैल भी गुरु साहिब से प्रभावित होकर विरोध छोड़ देते थे। सैद खां श्री अनंदपुर साहिब की तीसरी लड़ाई में गुरु जी की निरवैरता देखकर मुगल फौज का साथ छोड़कर चला गया तथा सैद बेग ने चमकौर

Final

साहिब के युद्ध के समय मुगल फौज का साथ छोड़ा।

सन् १७०४ में औरंगज़ेब की आज्ञा से चार राज्यों की फौज ने श्री अनंदपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया। एक महीने तक युद्ध करके दस लाख सैनिकों वाले शत्रु दल को यह एहसास हो गया कि उनकी फौज उन सिंघों को दबा नहीं सकी जिनकी संख्या केवल दस हज़ार के लगभग थी। फलस्वरूप शत्रु सेना ने नगर को चारों ओर से घेर कर नाकाबंदी कर दी। छः-सात महीने तक वे सिंघ (जिनमें अधिकतर तथाकथित उच्च जाति की दृष्टि में कंगाल, नाई, झीवर, बढ़ई, जाट आदि थे) अपने से सैकड़ों गुना अधिक शत्रु दल से मुकाबला करते रहे। वे रसद के समाप्त हो जाने तथा भूख-बीमारियों जैसी आपदाओं से घिरकर भी डटे रहे। शत्रु द्वारा छल-कपट का आश्रय लेकर श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली करवाए जाने पर चारों तरफ दस लाख के करीब शत्रु सेना के बीच में से डेढ़ हज़ार सिंघों का जान हथेली पर रखकर निकलना तथा चमकौर की गढ़ी में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दो साहिबज़ादों एवं ४० सिंघों द्वारा युद्ध-कला का जौहर दिखलाना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के क्रांतिकारी विचारों का ही परिणाम था। श्री गोकुल चंद नारंग के शब्दों में-- श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्रभावित होकर ऐसे मनुष्य भी रण-क्षेत्र के सूरमे बन गए जिन्होंने कभी शस्त्रों को हाथ भी नहीं लगाया था या कंधे पर बंदूक रखकर भी नहीं देखी थी। तथाकथित महरे (कहार), धोबी तथा नाई फौजों के जरनैल बन गए। उनके सामने बड़े-बड़े राजा तथा नवाब भी आने से घबराने लगे।" *(उक्त, पृष्ठ २२९)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हीन भावना से ग्रस्त, प्रताड़ित लोगों में आत्मविश्वास जगाकर उन्हें केवल समानता का अधिकार ही नहीं दिया, वरन सम्मान भी दिया और कहा :

*जुद्ध जिते इनही के प्रसादि, इनही के प्रसादि सु दान करे ॥*
*अघ अउघ टरे इनही के प्रसादि, इनही की क्रिपा फुन धाम भरे ॥*
*इनही के प्रसादि सु बिदिआ लई, इनही की क्रिपा सभ सत्रू मरे ॥*
*इनही की किपा के सजे हम हैं, नहीं मो सो गरीब करोर परे ॥*

साहिबज़ादों की शहादत की प्रतिकियास्वरूप सिक्खों के मन में शासक वर्ग के प्रति रोष तथा नफ़रत की आग भड़कनी स्वाभाविक थी। गुरु साहिब ने धैर्यपूर्वक जत्थेबंदी को मज़बूत करने तथा उचित अवसर का इंतजार करने का परामर्श दिया। औरंगज़ेब द्वारा संदेश तथा संधि के लिए पत्र भेजने पर उसके उत्तर में 'जफ़रनामा' अर्थात् 'विजय-पत्र' लिखकर भाई दइआ सिंघ जी के हाथों भेजा जिसमें उसे यह आभास कराया कि पहाड़ी राजाओं तथा उसके जरनैलों के नीच कर्म हकूमत के नाश का कारण बन सकते हैं। गुरु जी ने उसे ताड़ना करते हुए कहा कि "क्या हुआ जो मेरे चार पुत्र शहीद हो गए हैं, कुंडलीदार नागरूप खालसा पंथ चढ़दी कला में विद्यमान है।" गुरु जी के 'जफ़रनामा' का औरंगज़ेब पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह बीमार हो गया तथा सन् १७०७ में उसकी मृत्यु हो गयी। उस समय के हालात को देखते हुए सिक्खों का नेतृत्व करने के लिए गुरु साहिब ने अद्वितीय ढंग से योग्य वीर सेना-नायक का चुनाव किया। गुरु जी ने करामातों के चक्कर में फंसे हुए, अहंकार के मद में मस्त,

*(शेष पृष्ठ ३३ पर)*

Final

# व मा रा पनाह असत यज़दां अकाल

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

इतिहास ने क्रांतियों के कई दौर देखे हैं। अधिकतर क्रांतियां राज्य-सत्ता के बदलाव लेकर आईं और कुछेक के सांस्कृतिक-सामाजिक प्रभाव सामने आए। ऐसी सारी क्रांतियां शस्त्रों, जनशक्ति और जनभावनाओं के बल पर सम्पन्न हुईं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज एक ऐसी क्रांति के नायक थे जो शेष सभी क्रांतियों से भिन्न थी और जो सही अर्थों में क्रांति कही जा सकती है। अंग्रेजी में क्रांति का समानार्थी शब्द है-- रिवोल्यूशन, जिसका समेकित अर्थ है किसी पिंड की स्थिति में सम्पूर्ण घुमाव, गतिशीलता। क्रांति के परिणामस्वरूप यदि बदलाव की सम्पूर्ण प्रक्रिया सम्पन्न होती है तो उसी घटना को क्रांति कहा जा सकता है। राज्य-सत्ता का बदला जाना, किसी एक व्यवस्था के स्थान पर दूसरी वैकल्पिक व्यवस्था का आ जाना, कतिपय मुखर सुधारों का हो जाना वास्तविक अर्थों में क्रांति नहीं है। इस दृष्टि से इतिहास में अंकित बदलाव की किसी भी घटना को क्रांति की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। बस, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ही अपवादस्वरूप हैं। उन्होंने जो किया उसके आस-पास भी दूर-दूर तक कोई नहीं है, क्योंकि वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी थे और कहने में कोई संकोच नहीं कि वे परमात्मा रूप ही थे।

अन्य क्रांतियां समानांतर विकल्प लेकर सामने आती रही हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का स्पष्ट लक्ष्य था-- *"धरम चलावन संत उबारन ॥"* उन्हें ज्ञात था कि धर्म क्या है और यही वे संसार को बताना चाहते थे। उनमें शक्ति थी कि भलाई की कैसे प्रतिष्ठा की जा सकती है, जिसके लिए वे पंथ तैयार करना चाहते थे। यह अत्यंत दुष्कर और चुनौती भरा कार्य था जिसे पूरा करने के लिए उन्होंने किसी बाहरी शक्ति का नहीं, परमात्मा का सहारा लिया :

*ठाढ भयो मै जोरि कर बचन कहा सिर निआइ ॥*
*पंथ चलै तब जगत मै जब तुम करहु सहाइ॥३०॥६॥*
*(बचित्र नाटक)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने पूरे जीवन काल में परमात्मा के प्रति दृढ़ विश्वास हर स्थिति में संसार के सामने रखकर एक बहुत बड़ा सबक सिखाया कि तमाम सांसारिक ताकतों के समक्ष परमात्मा पर आस्था कहीं ऊंची और सहाय है। परमात्मा को उन्होंने उस समय भी अपना सबल सहायक माना जब मात्र नौ वर्ष की आयु में पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब की पवित्र शहादत के बाद वे सिक्ख कौम की रहनुमाई के लिए गुरगद्दी पर आसीन हुए; उस समय भी जब श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने के बाद परिवार बिखर गया और चमकौर की कच्ची गढ़ी में लाखों की मुगल सेना से मात्र चालीस सिक्खों के साथ टकराये और दो साहिबज़ादे शहीद करवाए; उस समय भी जब माछीवाड़े के जंगल में कुएं की टिंड का सिरहाना बनाकर अकेले विश्राम करते हुए विषमताओं का सामना किया और परमात्मा को

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३

Final

सहायक समझा। *"धरम चलावन"* के पथ पर जीवन की अंतिम सांस तक अडिग रहते हुए गुरु साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरगद्दी सौंप कर सिक्ख कौम को इतना महान बना दिया कि आने वाली पीढ़ियां गर्व से कह सकें कि हम सिक्ख हैं और उस श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की संतान हैं, जिन्होंने धर्म के अर्थ समझाने के लिए त्याग और बलिदान का वह काम किया जो अभूतपूर्व था। परमात्मा पर अडोल और अटूट विश्वास गुरु साहिब की क्रांति का एक अनोखा आधार था जिसे संसार ने पहली बार जाना :

*कि ऊ रा गरूर असत बर मुलकु माल ॥*
*व मा रा पनाह असत यज़दां अकाल ॥ १०६ ॥*
*(जफरनामा)*

ऐसा अटल विश्वास वही धारण कर सकता है जिसे संसार की वास्तविकता का ज्ञान हो। संसार में जो भी जन्म लेकर आया है वह काल के अधीन है और काल ने उसे ग्रस लेना है। गुरु साहिब ने कहा कि जितने भी देवी-देवता, अवतार हुए सभी अंत में कालवश हो गए। जितने भी राजा, शहंशाह हुए उन्हें काल ले गया। जितने भी जीव-जंतु उत्पन्न हुए महाबली काल ने उन्हें अपना शिकार बना लिया। परमात्मा की शरण में जाए बिना छुटकारा नहीं है चाहे जितने भी उपाय कर लें, तंत्र-मंत्र आजमा लें :

*बिना सरन तां की नही और ओटं ॥*
*लिखे जंत्र केते पढ़े मंत्र कोटं ॥७७॥१॥*
*(बचित्र नाटक)*

गुरु साहिब ने सृष्टि को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा। उन्होंने न केवल मनुष्यों, अन्य जीवों की बात की, उन्होंने कहा कि जितने भी लोक हैं और जितने भी सूर्य, चंद्रमा आदि ग्रह-नक्षत्र हैं वे भी काल के अधीन हैं। इस तरह उन्होंने मनुष्य की सारी शंकाओं का निवारण किया ताकि कोई भी दुविधा न रहे और वह परमात्मा की महिमा, उसकी शक्ति, उसके गुणों को समझकर उस पर अपनी अडिग आस्था को टिका सके :

*तुमरी महिमा अपर अपारा ॥*
*जा का लहिओ न किनहूं पारा ॥*
*देव देव राजन के राजा ॥*
*दीन दइआल गरीब निवाजा ॥१॥२॥(बचित्र नाटक)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यह विचार स्थापित किया कि परमात्मा की महानता अपार है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। वह सभी देवों का देव और सभी राजाओं का राजा अथवा सर्वोच्च, शिखर है। इसके बावजूद वह दयालु है और निर्बलों को बल देने वाला है। उसी परमात्मा से बल लेकर गुरु साहिब ने अपने मिशन की शुरूआत की। गुरु साहिब ने बल परमात्मा से प्राप्त किया और वो उनकी महान क्रांति का कारण बना। इसे निम्न गुरु-वचन से भली प्रकार समझा जा सकता है। गुरु-अनुसार चलने कि लिए इस वचन पर अमल करना भी हर सिक्ख का कर्त्तव्य बन जाता है :

*कहिओ प्रभु सु भाखि हों ॥*
*किसु न कान राखि हों ॥*
*किसू न भेख भीज हों ॥*
*अलेख बीज बीज हों ॥३५॥*
*पखाण पूज हों नहीं ॥*
*न भेख भीज हो कहीं ॥*
*अनंत नामु गाइ हों ॥*
*परम पुरख पाइ हों ॥३५॥ . . .*
*भजों सु एक नामयं ॥*
*जु काम सरब ठामयं ॥*
*न जाप आन को जपो ॥*
*न अउर थापना थपो ॥३७॥*

Final

*बिअंत नाम धिआइ हों ॥*
*परम जोति पाइ हों ॥*
*न धिआन आन को धरों ॥*
*न नाम आन उचरों ॥३८॥६॥ (बचित्र नाटक)*

परमात्मा पर दृढ़ विश्वास रखना आधार था, परमात्मा से बल प्राप्त करना शस्त्र-संगठन था और उस शस्त्र से अंतर को शुद्ध कर देना उनकी क्रांति की परिणिति थी। परमात्मा से बल लेकर मनुष्य की सोच में ऐसा सम्पूर्ण परिवर्तन उनका लक्ष्य था कि मनुष्य पूरी तरह परमात्मा के अधीन हो जाए, परमात्मा के अतिरिक्त किसी की भी बात से पूरी तरह विरत रहे, ढोंग, आडंबर से सावधान रहे और परमात्मा को अपने मन में पूरा का पूरा बसा ले; नाम-सिमरन को ही पूजा की एकमात्र विधि जाने और परमात्मा का नाम जपते-जपते ही उसे पाले। सदियों से प्रचलित मान्यताओं, ढोंग, आडंबर, पखंड को खंड-खंड करके मनुष्य को भ्रमों के गहरे उलझे जाल से उबारकर बाहर लाना और परमात्मा को पाने की एक नितांत सरल, सहज एवं सादगी भरी राह की ओर ले चलना अपने समय का एक ऐसा साहसिक कार्य था जिसे श्री गुरु नानक देव जी ने बड़े ही ठोस और निश्चित ढंग से आरंभ कर दिया था। यह कार्य श्री गुरु तेग बहादर साहिब तक आते-आते काफी परिपक्व हो चुका था, किंतु चुनौतियां भी उतनी ही गहरी हो चुकी थीं। धर्मांध मुगल शासक निजी प्रतिष्ठा का विषय बनाकर इस मिशन को रोकने के लिए खड़े हो चुके थे और तमाम आततायी तरीके अपना रहे थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सामने दोहरा दायित्व था। एक तो अंतर की शक्ति को बनाए रखना, दूसरा अंतर की शक्ति को बाहरी आकार प्रदान करना। इन दोनों मंतव्यों को साधने के लिए ही उन्होंने खालसा का सृजन किया जिसमें श्री गुरु नानक देव जी के मिशन को सम्पूर्णता मिली। श्री गुरु नानक देव जी स्थापित कर ही चुके थे कि परमात्मा के अतिरिक्त सब प्रलाप है :

*नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥*
*केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥*
*केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥*
*बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥*
*गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥*
*लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥*
*जितु तनि पाइअहि नानका से तन होवहि छार ॥*
*गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥*
*करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥*
*(पन्ना ४६४)*

श्री गुरु नानक देव जी जैसा बदलाव चाहते थे उसकी दृष्टि उपरोक्त वचन में मिलती है कि मनुष्य निडर होकर परमात्मा से जुड़े तथा बाकी किसी भी विधि और विचार को निरर्थक समझे। समाज और धर्म-क्षेत्र में जो कुछ भी हो रहा है उसमें स्वयं को न उलझाए, इससे विकार ही बढ़ेंगे। परमात्मा की महिमा वर्णन से परे है, कठिन है, इसलिए उसकी कृपा से ही उसे पाया जा सकता है। श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि अमूल्य गहने शरीर पर धारण कर लेने से क्या होगा, शरीर तो नाश हो जाने वाला है! श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी कहा कि अन्य किसी तरह से नहीं, शक्ति परमात्मा से ही मिलती है :

*बिन भगति सकति नही परत पान ॥*
*बहु करत होम अर जग्ग दान ॥*
*बिन एक नाम इक चित्त लीन ॥*
*फोकटो सरब धरमा बिहीन ॥२०॥१४०॥*
*(अकाल उसतत)*

सदियों से लोग समझते आ रहे थे कि

धन-सम्पदा, वंश, सेना, अस्त्र-शस्त्र, अधिकार और ओहदे से शक्ति आती है। गुरु साहिबान ने इस विचार को मूलत: ही उलट दिया और कहा कि ये सब व्यर्थ के विचार हैं। शक्ति तो परमात्मा से मिलती है और उसकी कृपा से मिलती है।

भक्ति की शक्ति को दृढ़ करने के बाद यह आवश्यकता थी कि इसे सिद्ध किया जाए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसकी परीक्षा के लिए १६९९ ई का वैसाखी का दिन नियत किया। जब पांच सिक्ख उनकी इस परीक्षा में सफल रहे तो उन्होंने घोषित कर दिया कि उनके सिक्ख पूर्णत: खालिस हो चुके हैं तथा उन्हें 'खालसा' का नाम मिला। खालसा और कुछ नहीं, पूर्ण गुरसिक्ख होने का प्रमाण-पत्र था। तत्कालीन समाज में साम्रांत कहे जाने वाले लोग अपने नाम के साथ उपाधि लगा लेते थे। गुरु साहिब ने खालसा को एक नहीं पांच-पांच भौतिक उपाधियां 'पांच ककारों' के रूप में प्रदान कर दीं, ताकि उसकी आत्मिक शक्ति को पहचानने में किसी को भी कोई संदेह या समस्या न हो। पांच ककार स्वाभिमान और प्रकट आत्मिक प्रतिबद्धता के भी प्रतीक बन गए, जिससे गुरसिक्खों को निरंतर अपनी राह पर चलते रहने की प्रेरणा और जागरूकता मिलती रहे।

अंतर की दशा एक समान हो, सभी परमात्मा से समान रूप से जुड़े हों और एक समान नाम-सिमरन के जरिए परमात्मा की कृपा पा रहे हों; बाहर रूप से भी सभी ने एक समान वेश-पांच ककार धारण कर लिए हों तथा सभी के नाम के आगे 'सिंघ' या 'कौर' लगा हो, यह एक समग्र और परम महान परिवर्तन था, जो मानव सभ्यता के समूचे इतिहास में कभी देखा गया होगा। कभी पौराणिक कथाओं में देव और दानव अमृत के लिए झगड़े होंगे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अमृत की निर्मल धारा ही बहा दी और जन-जन को खंडे की पाहुल के अमृत से ऐसा निहाल किया कि उनके हृदयों में परमात्मा के नाम की रोशनी जगमगा उठी :

*जागति जोति जपै निसि बासुर एकु बिना मनि नैक न आनै ॥*
*पूरन प्रेम प्रतीति सजै, ब्रत गोर मढ़ी मह भूल न मानै ॥*
*तीरथ दान दया तप संजम, एकु बिना नहि एक पछानै ॥*
*पूरन जोति जगै घट मै, तब खालिस ताहिं न खालिस जानै ॥५७॥*

इस तरह खालसा उस सम्पूर्ण बदलाव का प्रतीक बना जिसे गुरु साहिब ने अंजाम दिया।

जितने भी प्रमाण, ऐतिहासिक साक्ष्य श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बारे में मिलते हैं वे इस बात की पुष्टि करने वाले हैं कि अपने जीवन-काल में गुरु साहिब ने जितने भी कार्य किए बड़े ही नियोजित ढंग से, समय का भरपूर सदुपयोग करते हुए किए, ताकि वे अपने उद्देश्य को पूरा कर सकें। ऐसा लगता है कि सारा कुछ पहले से ही उनके सामने स्पष्ट था। वे किसी कुशल चित्रकार की तरह उनके द्वारा पहले से रेखा कित किए गए इतिहास के खाके पर बस, रंग भरते गए। उन्हें तो वही करना था जो परमात्मा ने उन्हें कहा था :

*जो निज प्रभ मो सो कहा सो कहिहों जग माहि ॥५९॥६॥* (बचित्र नाटक)

गुरु साहिब ने खालसा बनाया और खालसा को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण दी। कितना खालिस और कैसी शरण शबद-गुरु की, यह सवाल मन में जरूर उठे स्वयं को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का खालसा कहने से पहले।

Final

# श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : युगीन परिवेश

*-डॉ. अंजुमन**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भारतीय इतिहास के उत्तर-मध्य युग में आते हैं। ये सिक्ख धर्म के दसवें गुरु हैं। इन्होंने श्री गुरु नानक देव जी और उनके अनुवर्ती गुरुओं के विचारों को अपने चिंतन का आधार बनाया। इन्होंने अपने युग के प्रभावों को आत्मसात किया और उनके अनुरूप पूर्ववर्ती गुरुओं के चिंतन में भी विस्तार किया।

किसी भी महान चिंतक और साहित्यकार पर युगीन परिवेश का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता ही है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के संदर्भ में युगीन परिवेश के प्रभाव के बारे में डा. प्रसिन्नी सहगल लिखती हैं-- "किसी भी कवि या लेखक के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए तद्युगीन परिवेश का पर्यवेक्षण आवश्यक होता है। बाहरी हलचल ही चेतना की प्रसुप्त शक्तियों को जागृत एवं उत्तेजित करती है। मानव-मस्तिष्क तत्कालीन परिस्थितियों के राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक स्वरूपों का समीचीन अध्ययन करके प्रस्तुत समस्याओं के निदान खोजने का प्रयास करता है। सिक्खों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व और कृतित्व भी तद्‌युगीन परिवेश से न केवल निर्मित एवं प्रभावित है वरन् उसमें नए मोड़ देने में भी समर्थ हुआ है।"[१] इसी विचार को डॉ. महीप सिंघ इस प्रकार रेखांकित करते हैं-- "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी पर उनके अपने युग की राजनीतिक स्थिति की जितनी स्पष्ट एवं गहरी छाप है, उतनी सामान्यत: अन्य कवियों पर नहीं दिखाई देती। उसका कारण भी स्पष्ट है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पूर्ववर्ती भक्ति-परंपरा के कवियों का राजनीति से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बंध न के बराबर था। निर्गुण धारा के कवियों की रचनाओं में देश के राजनीतिक जीवन के परिवर्तन के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं की ओर ध्यान देने की प्रवृत्ति थोड़ी-बहुत है, परंतु सगुण भक्त इस दृष्टि से निरपेक्ष से ही है।"[२] इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के महान कार्यों और उनके साहित्य की जानकारी के लिए युगीन परिस्थितियों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। इसी युगीन परिवेश का वर्णन अग्रांकित पंक्तियों में प्रस्तुत है :

*राजनीतिक परिवेश :* श्री गुरु नानक देव जी के समय भारत पर सिकंदर लोधी तथा इब्राहिम लोधी का शासन था। सन् १५२६ में पानीपत के मैदान में बाबर ने इब्राहिम लोधी को पराजित किया और मुगल शासन की नींव डाली। बाबर क्रूर, कठोर और निर्दयी बादशाह था। उसने अपने आक्रमण के समय भारतीयों पर बहुत अत्याचार किए। उसके आक्रमण से भारत की हुई दुर्दशा को गुरु जी ने अपनी आंखों से देखा था। उस भीषण अत्याचार को देखकर गुरु साहिब द्रवीभूत हो गए और इन्होंने परमात्मा को उपालंभ देते हुए कहा :

*खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥*

*गांव धौलपुर, डाक: तलवंडी लाल सिंघ, तहसील बटाला, ज़िला गुरदासपुर-१४३५०५; मो: ९९८८१-९८६१६

Final

*आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥*
*एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥*
*(पन्ना ३६८)*

अर्थात् बाबर ने खुरासान पर शासन किया और उसे अपना समझकर बचाए रखा। उसने हिंदुस्तान को अपने आक्रमण से डराया। गुरु साहिब परमात्मा को उलाहना देते हुए कहते हैं कि इतनी मारकाट हुई, परंतु ऐ परमात्मा! क्या तुम में तनिक भी करुणा उत्पन्न नहीं हुई? क्या तुम्हें जरा भी दर्द नहीं आया? इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में विषम राजनीतिक परिस्थिति के प्रति अपनी प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की और एक जागरूक कवि का परिचय दिया। इन्होंने ही सर्वप्रथम राजाओं और उनके राज्याधिकारियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई।[३]

बाबर के बाद हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगज़ेब ने भारत पर राज्य किया। बादशाह हुमायूं और अकबर के समय श्री गुरु अंगद देव जी से लेकर श्री गुरु रामदास जी तक गुरु साहिबान विद्यमान थे। मुगल शासकों का सम्बंध गुरु दरबार से साथ बहुत अच्छा रहा। बादशाह जहांगीर ने अपने पूर्वकालीन बादशाहों की राजनीतिक विचारधारा को त्याग दिया और गैर-मुसलमानों के प्रति असहिष्णु बन गया। बादशाह जहांगीर श्री गुरु अरजन देव जी के धार्मिक विचारों से बहुत ईर्ष्या करता था। उसे श्री गुरु अरजन देव जी की आध्यात्मिक उन्नति अच्छी नहीं लगी। अन्त में उसने श्री गुरु अरजन देव जी को शहीद कर दिया। इसके पश्चात् कुछ समय तक मुगल शासन और गुरु-घर में कोई विशेष तनाव की स्थिति दृष्टिगोचर नहीं होती है। छठम गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मुगलों की प्रांतीय सेना से कुछ युद्ध किए और उनमें उन्हें विजय प्राप्त हुई।

मुगल शासक औरंगज़ेब बहुत ही कट्टर और धर्मांध शासक था। उसने हिंदुओं को सुरक्षा प्रदान करने के कारण श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद कर दिया था। उसके पश्चात् श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और औरंगज़ेब में संघर्ष चलता रहा। औरंगज़ेब का शासन-काल भारतीयों के जीवन-काल की दुखद गाथा है।

औरंगज़ेब का राज्य-काल संवत् १७१५ से संवत् १७६५ तक एक सम्पूर्ण अर्धशताब्दी को आच्छादित किए हुए है। उसका अधिकांश राज्य-काल अशांति और संघर्ष का इतिहास है। इसका पूर्वार्द्ध तो प्राय: जमींदारों, राजाओं तथा हिंदुओं के धार्मिक उपद्रवों का दमन करने में बीता। औरंगज़ेब के आदेशानुसार हिंदू पाठशालाओं को तोड़ दिया गया। उन्हें अपने त्योहार मनाने की मनाही थी। सरकारी नौकरी उनके लिए वर्जित थी।

औरंगज़ेब के इन अमानवीय कार्यों को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने देखा और उन्होंने ऐसी विषम राजनीतिक परिस्थिति से प्रभावित हो अपने राजनीतिक संघर्ष को आगे बढ़ाया। कुछ विद्वानों का मत है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को एक सूत्र में बांधकर युद्ध-प्रिय एवं अत्याचारियों के विरुद्ध लड़ने वाले खालसा पंथ का सृजन किया। उन्होंने समयानुसार सिक्खों को सैनिक रूप में परिवर्तित कर दिया।[४]

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर राजनीति परिवेश के प्रभाव को इंगित करती हुई डॉ. प्रसिन्नी सहगल लिखती हैं-- "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सारे राजनीतिक क्रिया-कलाप उनकी इच्छा के नहीं, युग-जन्य विवशता के प्रतीक

थे। वे चाहे औरंगज़ेब का विरोध करते हों, चाहे पहाड़ी राजाओं को संघटित करने का प्रयत्न हो, चाहे खालसा वीरों की सुदृढ़ सेना तैयार करते हों, चाहे युद्ध में मुगल सेना के छक्के छुड़ाते हों, चाहे हिंदुओं में राजनीतिक जागृति का बीज बोते हों, चाहे रूढ़िवादी इसलामी बर्बरता का प्रबल विरोध करते हों, सर्वत्र उस युग की परिवर्तित राजनीतिक स्थिति का व्यापक प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

उपर्युक्त चर्चा के बाद यह कहना उचित ही होगा कि मुगल सम्राटों की अदूरदर्शिता, धर्मान्धतापूर्ण राजनीतिक संकीर्णता और कटुता पर आधारित विभेदपरक शासन-नीति ने उस वर्ग को, जो केवल धार्मिक-सामाजिक समस्याओं और हिंदू मुस्लिम ऐक्य को ही पल्लवित-पुष्पित कर रहा था, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नेतृत्व में एक सुसंगठित राजनीतिक सैनिक समुदाय के रूप में परिवर्तित कर दिया।

*धार्मिक परिवेश :* प्राय: सारे मध्य युग का धार्मिक परिवेश विषम और निंदनीय रहा है। इस समय की धार्मिक स्थिति का वर्णन करते हुए डॉ. गोकुल चंद नारंग लिखते हैं कि "वास्तविक धर्म के स्रोत निरर्थक रीतियों, अंधविश्वासों, पुरोहितों की स्वार्थबुद्धि तथा जनसमूह की उदासीनता आदि के कारण बंद कर दिए गए थे। सच्चे धर्म का स्थान केवल कर्मकांड के नियमों ने ले रखा था और हिंदू धर्म का उच्च आध्यात्मिक स्वरूप मत-मतांतरों के आडंबरी स्वरूप के नीचे दब गया था। शताब्दियों के आक्रमणों तथा विदेशियों के कुशासन और प्रजा-पीड़न ने लोगों के हृदयों को सर्वथा मुरझा रखा था और धार्मिक परतंत्रता तथा निश्चलता ने लोगों की आचार-भ्रष्टता तथा उत्साह-हीनता को भंयकर रूप से बढ़ा रखा था।"[५]

इस प्रकार हिंदू लोगों में अनेक विकृतियां प्रवेश कर गई थीं। वे मूर्तियों की पूजा करते थे। पुरोहित वर्ग लोगों को धर्म के स्वनिर्मित चक्रव्यूह में फंसाए हुए था। श्री गुरु नानक देव जी ने हिंदू धर्म की इस अधोगति का चित्रण निम्न पंक्तियों में किया है :

*पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥*
*सिल पूजसि बगुल समाधं ॥*
*मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥*
*त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥*
*गलि माला तिलकु लिलाटं ॥*
*दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥*
*जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥*
*सभि फोकट निसचउ करमं ॥* *(पन्ना ४७०)*

धार्मिक दृष्टि से मुसलमान भी पतनोन्मुख थे। उन्होंने वास्तविक इस्लाम धर्म की उदारता और सहिष्णुता को तिलांजलि दे दी थी। मुस्लिम शासकों ने तलवार के बल पर इस्लाम धर्म का प्रचार करना प्रारंभ कर दिया था। इस्लाम धर्म का पुरोहित-वर्ग, मौलवी एवं काजी, केवल दिखावे के लिए धर्म-कर्म करता था। हज, रोजा, नमाज आदि केवल औपचारिक धार्मिक कार्य बनकर रह गए थे। मौलवी एवं काजी साधारण मुसलमानी समाज को जैसा चाहे वैसा ही चलाते थे। वस्तुत: जनसाधारण उन धर्म के ठेकेदारों से शोषित हो रहा था।[६]

बादशाह औरंगज़ेब धार्मिक दृष्टि से बहुत ही संकीर्ण और संकुचित मनोवृत्ति वाला था। उसने गैर-मुसलमानों को किसी भी तरह की स्वतंत्रता नहीं दी थी। इस संदर्भ में डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थवाल लिखते हैं कि "हिंदुओं के लिए धार्मिक स्वतंत्रता का तो प्रश्न ही नहीं उठ सकता था। उनके धर्म के प्रति प्रत्यक्ष रूप से घृणा प्रदर्शित की जाती थी। देवालयों को

गिराना, देवमूर्तियों को तोड़ना प्रत्येक मुस्लिम विजेता और शासक के लिए शौक का काम था।"[७] इसी तरह डॉ. रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं कि "हिंदुओं को केवल जज़िया देने से ही छुटकारा नहीं था। उन्हें अपनी पोशाक भी मामूली रखनी पड़ती थी। वे घोड़े पर चढ़कर मुसलमानों के सामने से नहीं निकल सकते थे; न शस्त्र धारण करने का उन्हें अधिकार था। अपने धर्म-कर्म भी हिंदुओं को इस चौकसी से निभाने पड़ते थे कि मुसलमान कहीं रुष्ट न हो जाएं।"[८]

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि उस समय समाज में 'धर्म' शब्द नाममात्र का ही रह गया था। वास्तव में धर्म की आड़ में अधर्म का बोलबाला था। वैसे कोई भी धर्म बुरा नहीं होता। बुराई तो मानव की विचारधारा में होती है, जिससे वह अपनी संकुचित दृष्टि द्वारा धर्म की गलत व्याख्या कर बैठता है। तत्कालीन धार्मिक वातावरण कुछ इसी प्रकार का था। झूठ, पाखंड, कर्मकांड, अंधविश्वास, रूढ़िवाद आदि का प्रचलन था। ऐसे पाखंडियों के बाहरी आडंबरों को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'फोकट धर्म' अर्थात् 'व्यर्थ का धर्म' की संज्ञा दी है।[९]

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नेतृत्व में सिक्खों ने धर्म संबंधी कई अच्छे कार्य किए। शस्त्र-संचालन के साथ-साथ इन्हें धार्मिक शिक्षा भी दी जाती थी। प्रेम और बंधुत्व की भावना का प्रवाह उनमें ज़ोर पकड़ता जा रहा था। गुरु और ईश्वर के प्रति श्रद्धा का पाठ घर-घर में पढ़ाया जाता था।

*सामाजिक परिवेश :* राजनीतिक और धार्मिक क्रिया-कलाप ही सामाजिक परिस्थिति को प्रभावित करते हैं। साथ ही सामाजिक परिस्थिति में ही राजनीति और धर्म का वास्तविक विवेचन तथा महत्वांकन संभव होता है। मध्यकालीन वातावरण में अस्तव्यस्तता की अधिकता से सामाजिक जीवन बहुत ही अशांत था। इस अशांति के दो कारण थे-- हिंदुओं-मुसलमानों का सामाजिक स्थायित्व के लिए लड़ना-झगड़ना और हिंदू समाज के आंतरिक क्षोभ का विविध रूपों में फूट निकलना।[१०]

भारत का सामाजिक जीवन उन दिनों दो वर्गों में बंटा हुआ था। एक वर्ग उनका था जो राजा थे, शासक थे, अमले, कारिंदे या दरबारी थे। इनका जीवन सुख-विलास और आनंद से व्यतीत होता था। राज्य का सम्बंध इसी वर्ग से रहता था। दूसरा वर्ग सामान्य जनता का था जो इस वर्ग से दूर थी और परिश्रम करके अपना जीविकोपार्जन करती थी तथा उन विलासियों के आराम के लिए धन भी देती थी। जैसे पहले वर्ग को दूसरे वर्ग के लिए दर्द नहीं था, वैसे ही जनता के हृदय में भी इस वर्ग के लिए कोई सहानुभूति नहीं थी।[११]

पंजाब का युगीन सामाजिक परिवेश भी ऊंच-नीच, बड़े-छोटे की भावना से ग्रसित था। डॉ. भारत भूषण चौधरी पंजाब की सामाजिक स्थिति के बारे में लिखते हैं-- "पंजाब के भीतर वर्ग की दृष्टि से जो जातियां निवास करती थीं, वे निम्नलिखित थीं-- एक वर्ग उनका था जो राजा थे, शासक थे, अमले, कारिंदे या दरबारी थे। ये मुख्यत: तुर्क थे। उनके बाद एक बड़ी संख्या मुसलमानों की थी। कुछ हिंदू भी इस वर्ग में सम्मिलित थे। दूसरा वर्ग सामान्य जनता का था। इसमें पंजाबी मुसलमान थे जो जाति और संस्कृति की दृष्टि से प्राय: भारतीय थे और उनमें परिवार के कुछ लोग कदाचित हिंदू ही थे। उनके विवाह आदि रीति-रिवाज़ उस समय तक बहुत कुछ हिंदुओं के ही समान थे।

तीसरा वर्ग, पंजाबी हिंदुओं का था, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी थे। चौथा वर्ग सिक्खों का था। उसमें भी केशधारी और सहजधारी सिक्ख के नाम से दो उपवर्ग थे। पांचवा वर्ग उन साधु और सन्यासियों का था जो विविध अखाड़ों में बड़ी संख्या में निवास करते थे और आवश्यकता पड़ने पर हिंदू धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष भी करते थे।[१२]

देश के ऐसे भिन्न-भिन्न समाजों से विभाजित और एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या भी भावना से पीड़ित समाज ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को बहुत प्रभावित किया। उनके उपर्युक्त विवेचन के पश्चात् नि:संकोच रूप से कहा जा सकता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समस्त कार्य-कलापों एवं साहित्यिक रचनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में तद्युगीन सामाजिक वातावरण ही था। मत-मतांतर एवं उपासना-पद्धतियों के परस्पर विरोधी होने के परिणामों से परिचित होने के कारण दशमेश जी ने सबके दोषों का उद्घाटन किया। विलासिता, प्रेममयी उन्मुक्त अनैतिकता का स्पष्ट चित्रण करके उनके दोषों से समाज को सचेत किया; कर्मकांडों, बाहरी आडंबरों और कुप्रथाओं का स्थान-स्थान पर विरोध किया एवं सर्वत्र सरल, जनोपयोगी उपासना जीवन-पद्धति और शांति के अभिनव संदेश को प्रचारित किया।[१३]

इस प्रकार सामाजिक परिवेश के प्रभाव से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी में वीर भावनाओं की अभिव्यक्ति, धार्मिक परिवेश की प्रभावपूर्ण शक्ति और प्रेम के अनेक चित्र सहज रूप से ही आ गए हैं।

*साहित्यिक परिवेश :* श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय देश में अरबी-फारसी और हिंदी-पंजाबी आदि में रचनाएं रची जा रही थीं। गुरु जी के समकालीन रीतिकालीन कवियों में चिंतामणि, बिहारी, मतिराम आदि उल्लेखनीय हैं। ये कवि राजाओं के आश्रय में रहते थे। आचार्य राम चन्द्र शुक्ल इनमें से अधिकांश के बारे में लिखते हैं-- "श्रृंगार के वर्णनों को अधिकांश कवियों ने अश्लीलता की सीमा तक पहुंचा दिया था। इसका कारण जनता की रुचि नहीं, आश्रयदाता राजाओं-महाराजाओं की रुचि थी, जिनके लिए कर्मण्यता और वीरता का जीवन बहुत कम रह गया था।[१४] इसी तरह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समकालीन कवियों ने अपने युग की राजनीतिक स्थिति को प्रस्तुत नहीं किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पंजाबी, ब्रज भाषा और फारसी में अपनी बाणी की रचना की है। उन्होंने अपनी बाणी में दर्शन, धर्म, साधना और समाज के विषयों को लिया है। उन्होंने हिंदी साहित्य के वीर रस प्रधान साहित्य के उद्धार में भी पूर्ण सहयोग दिया। उन्होंने अपने युग के श्रृंगार-प्रधान साहित्य को देखते हुए अत्यंत प्रेरणादायक और ओजस्वी साहित्य की रचना की।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अविर्भाव से पूर्व देश का नैतिक और आर्थिक परिवेश भी अत्यंत शोचनीय और दयनीय था। आर्थिक दृष्टि से साधारण लोगों को जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक साधनों की कमी थी। वे बड़ी कठिनाई से अपना जीवन व्यतीत करते थे। औरंगज़ेब के काल में अनेक प्रकार के कर देने पड़ते थे। इस प्रकार सर्वसाधारण की आर्थिक दशा बहुत कमज़ोर थी। शासक और सामंत वर्ग का नैतिक पतन हो चुका था। सुरा और सुंदरी का सेवन ही उनके जीवन का लक्ष्य था। ऐसे नैतिक पतन की अवस्था में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लोगों को श्रृंगारिक प्रवृत्तियों की ओर से हटाया और उन्हें सुंदर जीवन व्यतीत करने का

उपदेश दिया।

समग्रत: कहा जा सकता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के युगीन परिवेश ने उनके साहित्यकार के रूप को प्रभावित किया। युगीन परिवेश को सुंदर बनाने के लिए उन्होंने उत्कृष्ट कोटि के साहित्य की रचना की। उनके साहित्य में अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध ज़ोरदार शब्दों में लिखा गया है।

*संदर्भ सूची :*


*१. डॉ. प्रसिन्नी सहगल, श्री गुरु गोबिंद सिंघ और उनका काव्य, लखनऊ : हिंदी साहित्य भंडार, पंथम संस्करण; १९६५*

*२. डॉ. महीप सिंघ, श्री गुरु गोबिंद सिंघ और उनकी हिंदी कविता, दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, प्रथम संस्करण, १९६९, पृष्ठ ९*

*३. डॉ. गुरचरन सिंघ पद्‌म, युग प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव और उनकी बाणी, श्री अमृतसर : नवचिंतन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९९०, पृष्ठ ३७.*

*४. डॉ. जदूदू नाथ सरकार, हिस्ट्री ऑफ औरंगज़ेब (भाग-३), कलकता : सरकार एंड संस, पृष्ठ १५५.*

*५. डॉ. गोकुल चंद नारंग, ट्रांसफारमेशन ऑफ सिखिज़्म, संस्करण १९५०, पृष्ठ ३१.*

*६. डॉ. गुरचरन सिंघ पद्‌म, श्री गुरु तेग बहादर साहिब : जीवन, चिंतन ते कला, जलंधर : नवचिंतन प्रकाशन, संस्करण १९७५, पृष्ठ ४९*

*७. डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थवाल, हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय, लखनऊ : अवध पब्लिशिंग हाऊस, संस्करण २००७, पृष्ठ ४*

*८. डॉ. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पटना : उदयांचल, संस्करण १९७०, पृष्ठ ३१८*

*९. डॉ. मोहनजीत सिंघ, श्री गुरु गोबिंद सिंघ की हिंदी रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन, पटियाला : भाषा विभाग, पंजाब, संस्करण १९८१, पृष्ठ ११*

*१०. डॉ. प्रसिन्नी सहगल, श्री गुरु गोबिंद सिंघ और उनका काव्य, लखनऊ : हिंदी साहित्य भंडार, संस्करण १९५६, पृष्ठ १७*

*११. डॉ. महीप सिंघ, श्री गुरु गोबिंद सिंघ और उनकी हिंदी कविता, दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, १९६९, पृष्ठ १४*

*१२. डॉ. भारत भूषण चौधरी, श्री गुरु गोबिंद सिंघ के दरबारी कवि, दिल्ली : स्वस्तिक साहित्य सदन, संस्करण १९७६, पृष्ठ २९*

*१३. डॉ. प्रसिन्नी सहगल, श्री गुरु गोबिंद सिंघ और उनका काव्य, लखनऊ : हिंदी साहित्य भंडार, १९५८, पृष्ठ २२*

*१४. आचार्य राम चंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, काशी : नागरी प्रचारिणी सभा, संस्करण २०२५, पृष्ठ २२३*


(सधन्यवाद : 'पंजाब सौरभ', जुलाई २००४)





# दरबारी कवियों की दृष्टि में दशमेश पिता का व्यक्तित्व

-डॉ. राजेंद्र सिंह 'साहिल'*

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सर्ववंशदानी, संत-सिपाही, महान् योद्धा, सफल नेतृत्वकर्ता, सामाजिक-आध्यात्मिक-राजनीतिक चिंतक, श्रेष्ठ साहित्यकार, बहुभाषी विद्वान, तथा दया, क्षमा, प्रेम, विनम्रता, परोपकार आदि उच्च मानवीय गुणों के मूर्त रूप, शरणदाता आदि-आदि सद्‌गुणों से विभूषित एक संपूर्ण एवं आदर्श व्यक्तित्व थे।

दशमेश पिता के विद्या दरबार में शामिल ५२ कवियों एवं ३४ विद्वानों ने गुरु जी के इस अद्वितीय व्यक्तित्व को बड़े ही प्रमाणिक ढंग से उजागर करते हुए अपनी-अपनी काव्य रचनाओं को सफल किया है।

दशमेश पिता के दरबारी कवि स्वाभाविक रूप से गुरु जी के योद्धा रूप से सर्वाधिक प्रभावित थे। दशमेश-दरबार के ढाडी मीर मुशकी ने अपनी एक वार में गुरु साहिब की शूरवीरता का वर्णन करते हुए कहा है :

*बजै निशान डंक कौ, भजै तू भूप लंक कौ,*
*हनू दुराई अंक कौ, न धीर धरै इंद जी।*
*मही चलै तला तलै, सुमेरु पात जयों हलै,*
*बराह दाढ कौ चलै, डरै फरै फनिंद जी।*
*तजयो महेश धयान कौ, न रंग भासमान कौ,*
*परयो जु कंम प्रान कौ, दसों दिसैं गजिंद जी।*
*परी पुकार आन कै, चलयो सुठाठ ठान कै,*
*सनधबध जवान कै, चढ़यो गुरु गोबिंद जी।*

दशमेश पिता गरीबों की दरिद्रता हर लेने वाले भी थे। कवि भाई हीर बहुत निर्धन था। उसने सुना था कि गुरु जी 'दीनबंधु' हैं और दीन-हीन का दुख-दारिद्रय मिटा देते हैं। वह अपनी किस्मत आज़माने गुरु जी के दरबार में आ पहुंचा और गुरु जी के सम्मुख खड़े होकर अदब से इस कबित्त का पाठ किया :

*पास ठाढो झगरत झुकत दरेरै मोहि,*
*बात न करत पाओं तहां बली बीर सों।*
*ऐसो अरि बिकट निकट बसै निसदिन,*
*निपट निशंक सठ घेरै फेर भीर सों।*
*दारिद कपूत! तेरो मरन बनयो है आज,*
*करकै सलाम विदा हूजै कबि हीर सों।*
*नातरु गोबिंद सिंघ विकल करैंगे तोहि,*
*टूक-टूक हवै हैं गाढे दानन के तीर सों।*

अर्थात् वह (दारिद्रय) पास खड़ा झगड़ रहा है। न दर पे झुकने देता है और न महाबली वीर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से बात ही करने देता है। मेरा यह विकट शत्रु रात-दिन मुझे घेरे रखता है। हे मेरे दुश्मन दारिद्रय! आज तेरी मृत्यु निश्चित है। तू कवि हीर को सलाम करके विदा हो जा, नहीं तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने दान के तीरों से तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।

दशमेश पिता की इस गरीब-नवाज़ी से कवि भाई सुदामा को लगता है कि वह दीन-हीन ब्राह्मण सुदामा के समान है जो श्रीकृष्ण जी के दर से झोलियां भर कर लौटा था :

*एकै संगि पढै हैं अवंतिका संदीपिनी के,*
*सोई सुध आई तौ बुलाइ बूझी बामा मै।*

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१

Final

*पुंगीफल होत तो असीस देतो नाथ जी को,*
*तंदुल ले दीने बांध लीने फटे जामा मै।*
*दीन दयालु सुनकै दयालु दरबार मिलै,*
*ऐतो कुछ दीनो पाइ अगनित सामा मै।*
*प्रीती कर जानै गुरु गोबिंद को मानै तांतै,*
*वही तूं गोबिंद वही बामन सुदामा मै।*

इसी प्रकार एक और दरबारी कवि भाई शारदा को दशमेश पिता की सांसारिक और आध्यात्मिक नवाज़िशें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि गुरु जी के हाथ में पकड़ी हुई छड़ी मन को मोह लेने वाली है :

*कुंज कुंज गलिनि बाई बन बांसुरी जी*
*उनही के संग सोई शारदा कहति है।*
*जमना के तट बंसी बट के निकट सोई,*
*तट सतुद्रव आन साहिबी करत है।*
*देखो भूप भूपनि के, भूम के भगत लोगो,*
*भाग या 'छरी' के मो सों कहिबे बनत है।*
*कान्ह हवै के औतरयो तो मुख ही रहति लागी,*
*गोबिंद हवै औतरयो तो हाथ ही रहत है।*

दशमेश पिता के दरबारी कवि गुरु जी की खूबसूरत शख़्सियत और सीधी-सच्ची सीरत के भी बड़े कायल थे। कवि भाई आलम गुरु जी के अद्वितीय व्यक्तित्व के बारे में लिखते हैं :

*सोभा हूं के सागर नवल नेह नागर हैं,*
*बल भीम सम सील कहां लौं गनाईए।*
*भूमि के विभूखन जू दूखन के दूखन,*
*समूह सुख हूं के सुख देखे तो अघाईए।*
*हिंमत निधान आन दान को बखानै जान,*
*आलम तमाम जाम आठों गुन गाईए।*
*प्रबल प्रतापी पातशाह गुरु गोबिंद जी,*
*भोज की सी मौज तेरे रोज ही पाईए।*

एक और दरबारी कवि भाई चंदा को दशमेश पिता पूर्व नौ गुरु साहिबान की सांझी ज्योति दिखते हैं :

*कलि में भयो एक मरद नानक है नाम जाको,*
*ता ते भये नौ एक जयोति सुहायो है।*
*बहुत गुरु गोबिंद सिंघ कलगी अवतार होइ,*
*खडगधारी होय महल दसवां कहायो है।*

कवि भाई सुंदर गुरु जी के विषय में लिखता है कि गुरु जी शरणागतों की सिद्धि, युद्ध के समुद्र, कुल के शिरोमणि, कामना पूर्ण करने वाले कल्प वृक्ष और क्रोध में काल-रूप हैं। गुरु जी की तेग सच्ची है, देग सच्ची है, इसीलिए आपको सच्चा पातशाह कहा जाता है :

*साधन को सिद्‌ध, शरणागत समर सिंधु,*
*सुधासर 'सुंदर' सरस पद पायो है।*
*कुल के कलस, कवि कामना को काम तरु,*
*कोप कीये काल, कवियन गुन गायो है।*
*देवन मै, दानव मै, मानव मुनिनि हूं मै,*
*जां को जस ज़ाहर जहान चलि आयो है।*
*तेग़ साचो, देग़ साचो, सूरमा शरन साचो,*
*साचो पातिसाहु गुरू गोबिंद कहायो है।*

कवि भाई हुसैन अली को तो दशमेश पिता खुदा ही लगते हैं :

*दीदार-ए-खुदा गर नहीं तुमने देखा,*
*गोबिंद को देखो वही हू-ब-हू है।*
*दर मसकीन 'हुसैन' क्यों छोड़े,*
*तरीके गुलामी जु तौकि ग़लू है।*

कवि भाई गोपाल के लिए गुरु जी यम की फांस काटने वाले हैं :

*गुरु गोबिंद प्रताप ते, काटि अहं जम फासि।*

कवि भाई हंसराम को भी दशमेश पिता पूर्ण परमेश्वर लगते हैं :

*कौन बडो या जगत मे, को दाता को सूर?*
*कां के रन अरु दान में, मुख पर बरसत नूर?*
*रचयो ब्रहम कर आपनो, दीनो भू को भार।*
*सो तो गुरु गोबिंद हैं, नानक को औतार।*

इसी प्रकार कवि भाई कुवरेश गुरु साहिब

Final

के साहित्य-प्रेम का वर्णन करते हुए कहते हैं :

*गुरु गोबिंद नरिंद है, तेग बहादुर नंद।*
*जिन ते जीवन है सकल, भूतल कवि बुधब्रिंद ॥*

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सारा संघर्ष दलित-शोषित मानवता की रक्षा के लिए था। ज़ालिमों की नींद उड़ाने के लिए दशम पातशाह का नाम ही काफ़ी होता था।

कवि भाई मंगल सिंघ का बयान है :

*अनंद दा वाजा नित वजदा अनंदपुर,*
*सुण सुण सुध भुलदी ए नर नाह दी। . . .*
*सवणे ना देंदी सुख, दुज्जनां नू रात दिन,*
*नौबत गोबिंद सिंघ गुरू पातशाह दी।*

गुरु जी ने खालसे की सृजना की, अमृत का दान बख़्शकर चिड़ियों (आम लोग, सहमे हुए, शक्तिहीन) को बाज़ों (ताकतवर, शासक, प्रशासक, डराने-धमकाने वाले) से भी अधिक शक्तिशाली बना दिया। उस पर विनम्रता की पराकाष्ठा यह कि स्वयं हाथ जोड़कर पांच प्यारों से अमृत का दान मांगा। कवि भाई गुरदास सिंघ बयान करते हैं :

*गुरु दास मनाई कालका खंडे की वेला।*
*पीओ पाहुल खंडधार हुइ जनम सुहेला।*
*संगति कीनी खालसा मनमुखी दुहेला।*
*वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥*

*(वार ४१:१)*

कवि भाई ब्रहम भट्ट गुरु जी की विलक्षण आध्यात्मिक शख़्सियत के विषय में कहता है :

*गुरु जी गोबिंद सिंघ, चाहौं तुम सोई करौं,*
*बूझ देखयो बेद इस बात को उगाही है।*
*और पातशाही सब लोगन कौ पातशाहु,*
*पातशाहु पर साची तेरी पातशाही है।*

दशमेश पिता की शख़्सियत के लौकिक एवं पारलौकिक चमत्कार को देखकर भाई नंद लाल जी ने लिखा है :

*नासिरो-मनसूर गुर गोबिंद सिंघ।*
*ईज़दि-मनज़ूर गुरू गोबिंद सिंघ।*
*हक़ हक़ अंदेश गुर गोबिंद सिंघ।*
*बादशाह दरवेश गुर गोबिंद सिंघ।*

यह साहिब-ए-कामल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विलक्षण व्यक्तित्व की ही महानता है कि निमाणे दरबारी कवि उस विशाल समुद्र की एक-एक बूंद मात्र का चित्रण करके स्वयं और अपने काव्य को अमर बना गये।

---

## *श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : क्रांतिकारी के रूप में*

*(पृष्ठ २० का शेष)*

अपनी असीम शक्ति का दुरुपयोग करने वाले माधोदास को अपने क्रांतिकारी विचारों से कल्याकारी मार्ग का पथिक बनाकर उसकी शक्तियों को सही दिशा दी। गुरु जी के दैदीप्यमान अद्बितीय व्यक्तित्व से प्रभावित, मन्त्र-मुगध हुए क्षमाप्रार्थी माधोदास को सिक्ख मर्यादा के अनुसार अमृत छकाकर बाबा बंदा सिंघ बहादर बना दिया, जिन्होंने चपड़चिड़ी के युद्ध में खालसाई सेना का नेतृत्व करते हुए वज़ीर खां को मौत के घाट उतार दिया; सिक्ख राज्य की नींव रखी तथा श्री गुरु नानक देव जी व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम का सिक्का जारी किया।

इस प्रकार कह सकते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु नानक देव जी के मिशन को सम्पूर्णता के पथ पर पहुंचा दिया तथा अपने क्रांतिकारी विचारों एवं अमूल्य उपदेशों से मनुष्यों के अज्ञानतापूर्ण व अंधकारमय जीवन में ज्ञान का प्रकाश किया।

# साका तरनतारन साहिब : २६ जनवरी, १९२१ ई

*-सिमरजीत सिंघ**

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने करतारपुर साहिब (जलंधर), श्री हरिगोबिंदपुर तथा तरनतारन साहिब शहर को आबाद एवं निर्माण करने में अहम भूमिका निभाई है। सन् १५९६ ई में गुरु साहिब ने तरनतारन साहिब की स्थापना की। इससे पूर्व इस इलाके में जंगली जानवरों तथा जंगली बेल-बूटों की भरमार थी। इलाके में पानी के कई छोटे-बड़े स्रोत थे। इस रमणीय जंगली क्षेत्र में कई तपस्वी तथा संत-महात्मा आम विचरते थे।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का प्रिथी चंद द्वारा विरोध किया जाने लगा। गुरु साहिब ने श्री अमृतसर की सेवा-संभाल कुछ प्रमुख सिक्खों को सौंप दी। गुरु साहिब श्री अमृतसर से चलकर बासरके, खडूर साहिब, गोइंदवाल साहिब, गुरू की वडाली आदि नगरों में सिक्खी का प्रचार करते हुए तरनतारन वाली जगह पर पहुंचे। यहां का जल-स्रोत गुरु जी को पसंद आया। इस स्रोत का जल शीशे की तरह साफ था। श्री गुरु अरजन देव जी के मन को इस रमणीय स्थान ने बहुत प्रभावित किया। बूटे शाह ने 'तवारीख-ए-पंजाब' में तरनतारन साहिब के बारे में वर्णन करते हुए लिखा है-- "इस मुलख दी पूरबी हद्द वैरोवाल, जो दरिआउ बिहार (बिआस) के कंढे है, पच्छमी हद्द शहिर लाहौर, उत्तर की हद्द शहिर अंम्रितसर तथा इस दे दक्खण बंने शहिर कसूर है।"

यह जल-स्रोत वाली ढाब पलासौर तथा गांव खानेवाल की मालकी थी। इस ढाब की मालकी के बारे में अकसर दोनों गांवों में लड़ाई-झगड़ा होता रहता था। 'सूरज प्रकाश' के कर्त्ता भाई संतोख सिंघ के अनुसार :

*इक तो पलासूर तहिं ग्राम।*
*खानवाल दूसर को नाम।*
*इन ते आदिक ग्राम जि और।*
*लरति परसपर रहिं तिस ठौर ॥३८॥*
*बहु नर मरहिं परहिं संग्राम।*
*करते द्वैख जांहि जम धाम।*

गुरु जी ने सिक्खों को भेजकर पास के गांव के मुखी आदमियों को इस ढाब पर बुलाया। गुरु जी ने गांवों का झगड़ा सदा के लिए खत्म करने के लिए उनको मुंह मांगी कीमत देने की पेशकश करके गुरु-घर का निर्माण करने सम्बंधी सारी योजना बताई। 'सूरज प्रकाश' के अनुसार :

*अगले दिन ग्रामीन हकारे।*
*लरन बिखे बहु दोष उचारे।*
*इक तौ तुमरी मिटहि लराई।*
*दुतीए धन लेवहु मन भाई ॥४०॥*
*त्रितीए गुर को कारज इहां।*
*चतुरथ नर प्रापति फल महां।*
*देहु भूमिका गुर घर को अबि।*
*दरब मोल ते लिहु दुगुना लब ॥४१॥*

इस प्रकार गुरु जी ने एक लाख सत्तावन हज़ार रुपए देकर यह ज़मीन खरीद ली :

*दीए रजतपण लच्छ प्रकाश।*

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

*अधिक सहंस्र सपत पंचासि।*

सरकारी पटा श्री तरनतारन साहिब जो कि फतिआबाद के हाकिम की मौजूदगी में लिखा गया था, उसमें लिखा है :-

"सजरा नशब कसबा तरन तारन संन १८६५ दफा अव्वल हालात अबादी :- अरसा २७५ साल दा गुजरा है कि गुरू अरजन देव जी श्री अंम्रितसर से इस जग्हा बतौर जंगल वैरान पड़ी हूई थी। गुरू साहिब वहां एक मकान फकीराना बणा कर गुज़ारा करते रहे और अकवाम मुखतलिफ़ कसरत से उन के सेवक हो गए और उस वकत गुरू साहिब ने तखमीनन एक हज़ार आठ सौ विघा अराज़ी मसंमी खानाराजपूत साकन पलासौर वनीज़ दीगर देहात गरदोनवाह व तफसील ज़ैल पट्टी पलासौर थेह ब्राहमणा वाला से खरीद करी। सिरफ खाना राजपूत मुसलमान ने तखमीनन पांच सौ रुपए को दी और कौम हिंदू ने बतौर हिबा बिला लेने कीमत दे दी। गुरू साहिब ने अबाद करना वी गुरदुआरा व तलाब (सरोवर) बनाना शुरू कीआ और चाहत आपणी लागत से तिआर करवाए और वहां एक छंभ जिसमें पाणी रहिता था, जो शखश बीमार मूज़जम की तरह आता था, वह बीमारी से आराम पाता था। उस वकत से गुरू के नाम पर तरन तारन मशहूर कीआ गिआ जब से बराबर अबाद है।"

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने १७ वैसाख, संवत् १६४७ बिक्रमी को पलासौर तथा गांव खारा की ज़मीन पर बहुत बड़ा सरोवर तैयार करवाया। इस सरोवर के निर्माण के लिए बाबा बुड्ढा जी से अरदास करवाकर चेत्र माह की अमावस वाले दिन १६४३ बिक्रमी को गुरु जी ने आपने हाथों से सरोवर का शिलान्यास किया। सरोवर की खुदाई के लिए गुरु जी भाई गुरदास जी से लिखवाकर पत्र भिजवाए।

भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार इस पावन सरोवर की लम्बाई ९९९ फुट तथा चौड़ाई ९९० फुट है। इसमें कुल २० सीढ़ियां हैं। इस सरोवर में बारी द्वाब शहर की शाखा में से हंसली द्वारा जल डाला जाता है। यह सेवा स. रघबीर सिंघ महाराजा जींद ने करवाई थी।

अलाउदीन मुफ्ती 'इबरतनामा' में लिखता है कि तरनतारन के सरोवर के जल में बीमारियां दूर करने की शक्ति है।

बूटे शाह अपनी पुस्तक 'तवारीख-ए-पंजाब' में भी तरनतारन साहिब के सरोवर तथा शहर के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा करता है।

श्री गुरु अरजन देव जी तरनतारन साहिब के सरोवर को पक्का करने के लिए ईंटें पकानी शुरू कर दीं। इलाके के चौधरी नूरदीन का पुत्र अमीरुदीन इन पक्की ईंटों को जबरन उठा ले गया। इन ईंटों से उसने अपने गांव सराय नूरदीन में अपना घर बनवा लिया।

गुरु जी द्वारा तरनतारन साहिब की स्थापना का मुख्य उद्देश्य सिक्ख धर्म का प्रचार-प्रसार करना था। उन दिनों यह स्थान लाहौर से गोइंदवाल साहिब जाने वाले तजारती मार्ग पर स्थित था। यह सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए उस समय की मुख्य जरूरत थी।

बाबा बंदा सिंघ बहादर के पंजाब में प्रवेश करने पर ज़ालिम राज्य का पतन होना शुरू हो गया। सिक्खों की जद्दोजहद के परिणामस्वरूप सिक्ख मिसलें उभरकर सामने आईं। इस जद्दोजहद में मुगल हाकिमों ने सिक्खों का नामो-निशान मिटाने में कोई कोर कसर शेष न छोड़ी। सिक्खों ने यह जंग बड़ी दृढ़ता एवं दिलेरी के साथ लड़ी। परिणामत: सिक्ख मिसलें अस्तित्व में आईं। यही सिक्ख मिसलें बाद में महाराजा

रणजीत सिंघ के राज्य में तबदील हो गयीं। अन्य मिसलों के सरदारों की मदद से फैज़लपुरिया मिसल के स. बुद्ध सिंघ सिंघपुरिये ने नूरदीन का वह मकान ढाह दिया, जहां उसने गुरु साहिब की ईंटें चोरी कर लगवाई थीं। ये ईंटें हाथों-हाथ तरनतारन साहिब लाकर सरोवर को पक्का किया गया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने राज्य-काल के समय तरनतारन साहिब की तरफ विशेष ध्यान दिया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने कर्मचारी मोती राम की बदौलत बाकी रहता सरोवर पक्का करवाया। उन्होंने १८८५ बिक्रमी में श्री दरबार साहिब का नया निर्माण करवाया।

अंग्रेज़-काल के समय गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंधक भ्रष्ट हो गए। गुरुद्वारा साहिबान के भीतर मनमत का प्रचार ज़ोर पकड़ गया। श्रद्धालु सिक्खों के मन में निराशता फैलती जा रही थी। अमावस के मेले पर लोक दूर-दूर से आते थे। मेले में लड़ाइयां होने लगीं। बुंगों का माहौल दिन-ब-दिन गिरावट की ओर जा रहा था। अंग्रेजों द्वारा ईसाई मिशनरियों को उत्साहित किया जा रहा था। ईसाई मिशनरी अपना प्रचार गुरुद्वारे के अंदर तक ले आए थे। 'खालसा एडवोकेट' अख़बार में उनको एक बुंगे के मालिक द्वारा ईसाई मत धारण किए जाने की खब़रें भी मिलीं। उसने बुंगे की दीवार पर क्रॉस के निशान भी छपवा दिए जो श्री दरबार साहिब की परिक्रमा की तरफ थी। ईसाई मिशनरियों ने श्री अमृतसर, जंडियाला, अजनाला तथा तरनतारन साहिब के सिक्खों के मुख्य केंद्रों पर अपने विशेष प्रचारक नियुक्त कर दिए। तरनतारन साहिब के गुरुद्वारा साहिब के प्रबंधकों ने लाहौर के कमिशनर मिस्टर किंग के साथ मेल-मिलाप बढ़ा लिया। उन्होंने सरकार की शह पर गुरमति विरोधी गतिविधियां आरंभ कर दीं।

महंतों की शह पर गुंडा-अनसर आई संगत को परेशान करने लग गए। वे शराब पीकर सरेआम परिक्रमा में हुल्लड़बाज़ी करते लड़ाइयां करते यहां तक कि वेश्वाएं भी नचाते। यदि उनकी गतिविधियों को कोई रोकने की कोशिश करता तो वे उसकी मार-पीट करना आरंभ कर देते। उन दिनों इलाके का थानेदार एक भला पुरुष स. तेजा सिंघ आ गया। लोगों की फरियाद पर उसने इनको सुधारने की कोशिश की। ज्ञानी करतार सिंघ इसके बारे में वर्णन करते हैं :

*थाणेदार तेजा सिंघ इक आया, ओह दे पास फरिआद पुचाउण बहुते।*
*ओस खूब कीते सिद्धे मार लुच्चे, लग्गे ओस तों अक्खां चुराउण बहुते।*

महंतों द्वारा श्री दरबार साहिब के दर्शन के लिए आए एक निहंग सिंघ स. आतमा सिंघ की इसलिए मार-पीट की गयी कि वह गुरबाणी के शबद पढ़ रहा था। शहर के एक सज्जन की नौजवान लड़की के साथ एक महंत द्वारा गुरुद्वारा साहिब के अंदर ही छेड़छाड़ की गयी। जब लोगों ने इसका विरोध किया तो महंतों ने अपनी गलती मानने की बजाए बड़ी बेशर्मी से कहा कि आप लोग अपनी स्त्रियों को यहां पर न आने दें, हम कौन-सा किसी को बुलाने जाते हैं। सिंघ सभा के सचिव भाई संत सिंघ का बच्चा सरोवर में स्नान करने आया तो उसके गले के साथ पत्थर बांधकर सरोवर में डुबो दिया गया। कई महंत दुराचारी हो चुके थे व केशों का भी अपमान करने लग गए थे।

२६ जनवरी, १९२१ ई वाले दिन श्री अकाल तख़्त साहिब की दूसरी मंज़िल पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की मीटिंग

हुई। एक सिंघ ने भरे दीवान में तरनतारन साहिब के सारे हालात बयान किए। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया इसके बारे में बयान करते हैं :

*तरनतारनो आउण शकाइतां जी, एस धाम दा कुझ सुधार करीए।*
*सेवादार एथे करन पाप भारे, इहनां वासते कुझ विचार करीए।*
*आखरकार कमेटी दीवान कीता, सोच एस 'ते नाल विसथार करीए।*

दीवान में हाज़िर सिंघों ने तरनतारन साहिब को भ्रष्ट महंतों से आज़ाद करवाने का अरदासा सोध लिया। चूहड़काणे से भाई सुच्चा सिंघ चक्रवाला २२ सिंघों का जत्था लेकर श्री अमृतसर पहुंच गया।

अगले दिन सुबह सिंघों का एक जत्था तरनतारन साहिब पहुंच गया। ये सारे माथा टेककर श्री दरबार साहिब के अंदर बैठ गए। रागी सिंघ 'आसा की वार' का कीर्तन कर रहे थे। शहर में जत्थे के आने की ख़बर पहुंच गयी। शहर निवासी भी गुरुद्वारा साहिब में इकट्ठा होना आरंभ हो गए। 'आसा की वार' के भोग के उपरांत गुरुद्वारा साहिब के महंत तेजा सिंघ ने संगत को संबोधन करना शुरू किया : "बाहर से आया जत्था गुरुद्वारा साहिब पर जबरदस्ती कब्ज़ा करना चाहता है। इससे पहले गुरुद्वारा पंजा साहिब पर भी इन्होंने ऐसे ही कब्ज़ा किया है। अब ये तरनतारन साहिब पर कब्ज़ा करने आए हैं। मैं इन वीरों को बताना चाहता हूँ कि हम उदासी साधु नहीं हैं। हमें श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुए गुरमते की ख़बर पहुंच गयी थी। हमने भी पूरा प्रबंध किया हुआ है। हमारे यहां १०० घरों में १००० की संख्या में नौजवान हथियारों से लैस तैयार बैठे हैं। सिर्फ नगाड़े पर चोट लगाने की देर है सब यहां पर पहुंच जाएंगे।" यह कहकर महंत बैठ गया।

स. करतार सिंघ झब्बर, जो सामने बैठे सारी वार्ता सुन रहे थे, संगत को संबोधन करने के लिए उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने भाषण में कहना शुरू किया, "हम आज कोई गुरुद्वारे पर नया कब्ज़ा करने नहीं आए। पंथ का कब्ज़ा उस समय ही हो गया था जब पंथ ने श्री अकाल तख़्त साहिब का प्रबंध संभाला है। महंत जी को मालूम होना चाहिए कि श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री दरबार साहिब, गुरुद्वारा बाबा अटल राय तथा श्री तरनतारन साहिब का सरबराह एक ही है, इसलिए पंथ का कब्ज़ा तो हो चुका है। आज तो हम गुरुद्वारा साहिब में पतितों, गुरु-निंदकों को बाहर निकालने आए हैं हमारा गुरु के सिक्खों के साथ कोई विरोध नहीं है।"

गुरुद्वारा साहिब में अरदास करके भोग डाल दिया गया। भाई मोहन सिंघ वैद्य, भाई सुंदर सिंघ तथा भाई संत सिंघ का जत्था ढोटीआं वाले बुंगे में ठहर गया। भाई मोहन सिंघ जी ने शहर के सूझवान आदमियों से बातचीत की। बातचीत के दौरान संधि की शर्तें लिख ली गयीं। महंत एक तरफ तो सुलह की बातें करते रहे और दूसरी तरफ उन्होंने आस-पास वाले गांवों से बदमाशों को लाने के लिए आदमी भेज दिए। इस तरह ये ख़बरें पास के गांवों में भी पहुंच गयीं। जहां एक तरफ किराए के बदमाश महंतों की सहायता के लिए आते वहीं दूसरी तरफ सारा गांव ही अकालियों के हक में आना शुरू हो गया। शाम तक ६-७ हज़ार की संख्या में संगत गुरुद्वारा साहिब में इकट्ठी हो गयी। दीवान सज गया। रहरासि के भोग के उपरांत एक महंत ने हथगोला संगत पर फेंक दिया जिससे भारी धमाका हुआ। संगत में भगदड़

Final

मच गयी। बुंगों पर बैठे महंतों ने संगत पर ईंटें बरसानी शुरू कर दीं। श्री दरबार साहिब के अंदर बैठे महंतों के आदमियों ने संगत पर लाठियों, छवियों से हमला कर दिया। इस दौरान १७ सिंघ गंभीर रूप से जख़्मी हो गए। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया बयान करते हैं :

*ओपर एसे रोले विच फड़ छवीआं, झटा पट्ट बदमाश आ वार करदे।*
*ठारां वीहां ताईं ज़खमी कर दित्ता, शुकर शुकर करतार करदे।*
*हत्थ किसे ने अग्गों न चुकना जी, जत्थेदार इह उच्ची पुकार करदे।*
*पै गिआ रोला करतार सिंघ, लोग वेखदे ते हा हा कार करदे।*

गांव वसाऊ कोट के भाई हुकम सिंघ तथा गांव अलादीन के भाई हज़ारा सिंघ गंभीर जख़्मी हो गए। स. बलवंत सिंघ की बाजू पर गहरा टक (घाव) लग गया। संगत ने भी थोड़ा संभलकर मुकाबला करना शुरू कर दिया। जत्थे ने जख़्मियों को अस्पताल भर्ती करवाया। रात के समय ही नगर की एक बुजुर्ग माता ने श्री दरबार साहिब की साफ-सफाई की सेवा की। अफसरों ने ज़ख्मी सिंघों को महंतों पर मुकद्दमा दायर करवाने के लिए ज़ोर डाला। सिंघों ने किसी भी महंत पर मुकद्दमा दायर करवाने से इंकार कर दिया। संगत ने महंतों को फिटकारें डालनी शुरू कर दीं। महंत हाकिमों का रुख अपने विपरीत देखकर परेशान हो गए। महंत हर तरफ से अपना सहयोग गंवा बैठे थे। अंत में हार कर महंतों ने पंथ की शरण में जाकर माफी मांगने की योजना बनायी।

भाई हज़ारा सिंघ तथा भाई हुकम सिंघ जख़्मों की पीड़ा न झेलते हुए ४ फरवरी वाले दिन शहीदी प्राप्त कर गए। इन शहीदों की यादगारें मंजी साहिब के समीपस्थ बनवायी गयीं। गुरुद्वारा साहिब श्री दरबार साहिब, तरनतारन साहिब की सेवा-संभाल पंथक हाथों में आ गयी।

स. बलवंत सिंघ चक्करवाला काफी समय बाद दुरुस्त हुआ। जिन गांवों वालों ने महंतों के साथ मिलकर हमला किया था उन्होंने पंथ की शरण में आकर क्षमा-याचना की। ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया लिखते हैं :

*मादा पैदा कुरबानीआं फेर होया, पंथ आण होया हुशयार वीरो।*
*जिन्हां पेंडूआं आण के जुलम कीता, लई उन्हां ने मुफत फिटकार वीरो।*
*पच्छो तां जे पंथ दी शरन आ गए, गुरू दे गा भवजलों तार वीरो।*
*मूँह काला जहान दे विच होसी, नषट जाणगे हो परवार वीरो।*
*लाहनत लई पुजारीआं खट्ट भारी, हरमंदर पंथ ने लिआ संभार वीरो।*
*अंत रहि गिआ सच्च करतार सिंघा, कूड़ हो गिआ विच्चों उडार वीरो।*

*स्रोत पुस्तकें :-*
*१. भाई कान्ह सिंघ नाभा-- महान कोश*
*२. स. रछपाल सिंघ-- पंजाब कोश*
*३. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी)-- सिक्ख पंथ विशवकोश*
*४. स. नरैण सिंघ एम. ए.-- अकाली मोरचे ते झब्बर*
*५. स. किरपाल सिंघ चंदन-- सिक्खां दी संखेप गाथा*
*६. ज्ञानी करतार सिंघ कलासवालिया-- अकाली लहिरां नं: १*
*७. डॉ. हरिंदर सिंघ-- तरनतारन : इक सरवेखण*



Final

*गुरबाणी चिंतनधारा : ७६*

# सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

## *चौदहवीं असटपदी*

*सलोकु ॥*
*तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥*
*एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥ (पन्ना २८१)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने उपरोक्त सलोक में समस्त जीवों को सब तरह की चतुराइयां छोड़कर सहज भाव से परमेश्वर की बंदगी करने की प्रेरणा दी है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे भले पुरुषो! चतुराई अर्थात् अपनी बुद्धि का अभिमान छोड़ कर केवल परमेश्वर का सिमरन करो और अकाल पुरख पर भरोसा रखो। गुरु पातशाह के चिंतनानुसार इस तरह से प्रभु पर विश्वास और सिमरन की बदौलत तुम्हारे समस्त दुख, वहम-भ्रम तथा डर दूर हो जायेंगे। सर्वशक्तिमान परमेश्वर का सिमरन और विश्वास ही संसार में विचरण करते हुए समस्त दुखों, क्लेशों, संतापों, भ्रमों एवं भय से मुक्त कर देता है, क्योंकि दुनिया का डर हमें कायर बनाता है और निर्भय परमेश्वर का भय हमें समस्त भय से मुक्त करके निर्भयस्वरूप बना देता है। इसी तरह दुनिया पर किया गया विश्वास परिस्थितियों के अनुसार अविश्वास में बदल सकता है अर्थात् कोई भी समय पर हमारा विश्वास तोड़ सकता है, लेकिन उस सच्चे मालिक का भरोसा जीवन में कभी विचलित नहीं होने देगा। हमें सदैव उस सर्वगुणों के मालिक और अथाह शक्ति के भंडार परमेश्वर के भय में ही रहकर उसकी भक्ति करनी चाहिए, तभी हमारा जीवन सफल होगा।

*असटपदी ॥*
*मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥*
*देवन कउ एकै भगवानु ॥*
*जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥*
*बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥*
*मारै राखै एको आपि ॥*
*मानुख कै किछु नाही हाथि ॥*
*तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥*
*तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥*
*सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥*
*नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥*

चौदहवीं असटपदी की पहली पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी मनुष्य के चंचल मन को प्रबोधित करते हुए निर्मल उपदेश देते हैं कि समस्त मानवीय आशाएं त्याग कर केवल उस सर्व-समर्थ दातार पिता परमेश्वर से याचना करो जो सारी मुरादें पूरी करने वाला है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे मन! किसी भी मनुष्य का सहारा लेना बिलकुल ही व्यर्थ है, क्योंकि वह तो स्वयं ही याचक है। वह दूसरे को क्या देने योग्य हो सकता है? सबको देने वाला एक ही परिपूर्ण परमात्मा है जिससे दात प्राप्त कर लेने पर जीव

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९१२९७-६२५२३***

Final

को कोई तृष्णा नहीं सताती अर्थात् पारब्रह्म परमेश्वर से नाम-धन प्राप्त करके जीव सदा के लिए तृप्त हो जाता है। फिर किसी तरह का लालच उस पर हावी नहीं हो सकता। प्रभु खुद ही जीवों को मारने वाला और खुद ही उनकी प्रतिपालना करने वाला है। परमेश्वर का हुक्म समझकर ही सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है, क्योंकि उसकी रज़ा में ही सारी प्रकृति कार्यरत है। उसका हुक्म मानने के अतिरिक्त किसी की कोई पेश नहीं जाती, इसलिए परमेश्वर का हुक्म खुशी-खुशी से प्रवान करते हुए प्रभु का नाम हृदय-घर में पिरोकर रखो, क्योंकि उसी के नाम से ही उसके हुक्म को मानने की सामर्थ्य आती है। ऐसे परमेश्वर का श्वास-श्वास सिमरन करो। गुरु पंचम पिता सर्वकला-समर्थ प्रभु का सिमरन करने को प्रेरित करते हुए स्पष्ट हिदायत कर रहे हैं कि हे जीव! परमेश्वर के सिमरन की बरकतों से फिर कोई विघ्न पैदा नहीं होगा अर्थात् जीवन रूपी सफर में किसी तरह की कोई रुकावट नहीं आयेगी।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने हमें दुनियावी आसरे छोड़कर केवल प्रभु-चरणों का आसरा लेने हेतु प्रेरित किया है। अत: स्पष्ट है कि एक याचक दूसरे याचक को क्या देगा। चिंतकों के चिंतनानुसार संसार का कोई भी दाता भिखारी को बार-बार मांगने की मज़बूरी से मुक्त नहीं कर सकता, लेकिन गुरबाणी आशयानुसार केवल पारब्रह्म परमेश्वर ही वह दातार पिता है कि जिसे वह अपनी सिफ्त-सलाह बख़्श देता है अर्थात् अपने दर से नाम-धन बख़्श देता है उसे बादशाहों का भी बादशाह बना देता है। उसे फिर दुनिया से किसी की भी मोहताजी नहीं रह जाती। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं :

*जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥*
*नानक पातिसाही पातिसाहु ॥* *(पन्ना ५)*

वैसे भी दुनिया के समस्त भंडार आखिर खाली हो जाते हैं, लेकिन परमात्मा के भंडार कदाचित खाली नहीं होते। गुरु पंचम पातशाह ने इसी भाव को गुरबाणी में अन्यत्र भी दृढ़ करवाया है, यथा :

*नव निधि सिधि रिधि दीने करते तोटि न आवै काई राम ॥*
*खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ करते की दाति सवाई राम ॥*
*दाति सवाई निखुटि न जाई अंतरजामी पाइआ ॥*
*कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेड़ै आइआ ॥* *(पन्ना ७८३)*

समस्त दातें बख़्शने वाला तथा समस्त दुखों का नाश करने वाला परमेश्वर हर पल हमारे हृदय-घर में बसा रहे। उसी से जीव के समस्त कार्य संवरते हैं, जैसा कि नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने फरमाया है :

*--जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥*
*कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥*
*(पन्ना १४२८)*

*--उसतति मन महि करि निरंकार ॥*
*करि मन मेरे सति बिउहार ॥*
*निरमल रसना अंम्रितु पीउ ॥*
*सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥*
*नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥*
*साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥*
*चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥*
*मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥*
*कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥*
*हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥*

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे मेरे मन! तू सदैव हरि की

Final

उपमा कर अर्थात् प्रभु की महिमा का गान कर। हे मेरे मन! तू सद्व्यवहार कर अर्थात् अच्छा और सच्चा व्यवहार कर। रसना (जीभ) से नाम रूपी अमृत का पान कर, जिसकी बदौलत तेरा मन सदा के लिए आनंद भरपूर हो जाए। अत: अपने हृदय को सदा के लिए सुखी बना ले। तू नाम में चित्त को एकाग्र करके (हमेशा) प्रभु द्वारा रचित जगत-तमाशा अर्थात् उसके अजब रंग और कार्य देख। साध-जनों की संगत में रहा कर, ताकि बुरी संगत के प्रभाव से बचा रहे। अपने कदमों से परमेश्वर की राह पर चल अर्थात् प्रभु-दर्शाए मार्ग पर अग्रसर होकर जीवन में कामयाबी की मंज़िल हासिल करने हेतु सदैव प्रयत्यशील रहो, परमेश्वर का नाम क्षण-मात्र भी जप लेने से कोटिश पापों का नाश हो जाता है, अत: दुखों-संतापों का नाश करने वाला प्रभु का प्यारा नाम जपता रह। तू हाथों से सदैव प्रभु-मिलाप वाले कार्य कर अर्थात् ऐसे काम कर जो तुझे प्रभु से मिला दें। कानों से प्रभु की स्तुति सुनता रह। उसकी उपमा के गीत गायन एवं श्रवण कर। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में हिदायत कर रहे हैं कि उपरोक्त नेक कर्मों को करता हुआ हे जीव! तू उज्जवल, निर्मल मुख लेकर प्रभु की दरगाह में प्रवान हो जाएगा।

वस्तुत: जीवन में सच्चे सुख एवं शांति की प्राप्ति हेतु हर पल प्रभु का सिमरन करना चाहिए। नाम-सिमरन में ही सारी बरकतें और रहमतें समाई हैं, जिसकी बदौलत जीव मालिक की दरगाह हेतु उज्जवल सुख से प्रस्थान करता है। गुरबाणी में सर्वत्र मन को प्रबोधित किया गया है कि नाम रूपी अमृत का पान निरंतर करते रहना चाहिए, क्योंकि इसी अमृत रूपी जल से अंत:करण में भरी समस्त विषयों-विकारों की मैल उतर जायेगी। साथ ही अहंकार एवं माया के विष का नाश करके जीवात्मा को सच्चे सुख का अधिकारी बनाने वाला अमृत प्रभु का नाम ही तो है। गुरबाणी में श्री गुरु रामदास जी ने जीव को बड़ा सुंदर उपदेश दिया है :

*अंम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अंम्रितु गुरमति पाए राम ॥*
*हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रिति बिखु लहि जाए राम ॥* *(पन्ना ५३८)*

जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने भी जीव को हिदायत दी है कि अगर यह बुद्धि पापों और विकारों की मैल से भर जाए तो उसे केवल और केवल नाम रूपी साबुन से ही धोया जा सकता है, यथा :

*--भरीऐ मति पापा कै संगि ॥*
*ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥* *(पन्ना ४)*
*--बडभागी ते जन जग माहि ॥*
*सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥*
*राम नाम जो करहि बीचार ॥*
*से धनवंत गनी संसार ॥*
*मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥*
*सदा सदा जानहु ते सुखी ॥*
*एको एकु एकु पछानै ॥*
*इत उत की ओहु सोझी जानै ॥*
*नामि संगि जिस का मनु मानिआ ॥*
*नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥*

चौदहवीं असटपदी की तीसरी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इस दुनिया में सबसे भाग्यशाली, धनवान और सुखी उसे ही माना है जो सदैव हरि के गुण गायन करता है। उसे ही वास्तव में माया के प्रभाव से परे परिपूर्ण परमेश्वर की सच्ची पहचान हुई है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि

Final

जो व्यक्ति सदा हरि के गुण गायन करता है वही परम भाग्यशाली है, परमेश्वर की बंदगी करता है। वो मनुष्य जगत में वास्तव में धनवान है, जो पारब्रह्म परमेश्वर के नाम की विचार करता है अर्थात् हृदय में प्रभु-नाम का ध्यान धरता है। सच्चे अर्थों में वही मनुष्य सुखी है जो मन और तन से प्रभु का नाम उच्चारण करता है। उसे ही संसार में वास्तविक सुखी जानो। जो मनुष्य केवल और केवल परमेश्वर को ही हर जगह पहचानता है अर्थात् जर्रे-जर्रे में उसे ही देखता है, उन्हे ही लोक-परलोक की सही समझ आती है अर्थात् जसे ही जीवन जीने की कला आ जाती है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य का मन प्रभु-नाम में लीन हो जाता है उसने माया से निर्लिप्त प्रभु को पहचान लिया समझो। उसे ही यह गूढ़ रहस्य समझ में आता है कि केवल प्रभु ही माया के प्रभाव से परे है और उसका नाम ही समस्त विकारों में मुक्त करने की सामर्थ्य रखता है।

वस्तुत: समस्त जीव इस संसार में परमेश्वर से श्वासों की पूंजी लेकर 'व्यापार' करने आते हैं, लेकिन कोई विरले भाग्यशाली जीव ही गुरु-कृपा से इन श्वासों रूपी पूंजी से सही 'व्यापार' करने में समर्थ होते हैं, लाभ का सौदा करते हैं, जैसा कि गुरबाणी में पावन संदेश है हर जीव रूपी बणजारे (व्यापारी) हेतु :

*वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥*
*तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥*
*अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥*
*(पन्ना २२)*

गुरबाणी में यह तथ्य भी समझाया है कि जिसके पास नाम रूपी धन नहीं, उसे कैसे सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है? यथा :

*जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥*
*खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥*
*(पन्ना २३)*

जीवन में सदा कायम रहने वाला धन तो परमेश्वर का नाम ही है जिसे न चोर चुरा सकता है, न डाकू लूट सकता है। पूर्ण गुरु से प्राप्त इस धन को ही जीवात्मा का सच्चा साथी समझो। मनमुख इस धन से वंचित रह जाता है। जिसे यह सच्चा धन नसीब हो जाता है वही व्यापारी धन्य है, यथा गुरबाणी-प्रमाण है :

*--एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥*
*इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ ॥ . . .*
*धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥२॥ (पन्ना ५११)*

*--गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥*
*तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥*
*साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥*
*सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥*
*अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥*
*ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥*
*एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥*
*तिस की कटीऐ जम की फासा ॥*
*पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥*
*नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥*

गुरु पंचम पातशाह चौथी पउड़ी में पावन फरमान करते हैं कि जिस जीव का भरोसा केवल परमेश्वर पर बन जाता है वह उसी का नाम जपता हुआ आवागमन से मुक्त हो जाता है और इस लोक में उसके समस्त रोग, दुख, क्लेश, संताप मिट जाते हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि जो गुरु की कृपा से स्वयं को जान लेता है अर्थात् जिसे आत्म-ज्ञान हो जाता है

Final

उसकी समझो सारी तृष्णा ही मिट गई। जो जीव साधु की संगत अथवा सतसंगत में आकर हरि का सिमरन (सिफत-सलाह) करता है, वह समस्त रोगों (मानसिक, शारीरिक तथा आत्मिक) से बच जाता है। जो व्यक्ति हर रोज़ हरि की कीर्ति अर्थात् केवल उस परमेश्वर के कीर्तन में लगा रहता है वह गृहस्थ में रहता हुआ भी पूर्णतया माया से निर्लिप्त है। जिस मनुष्य की आशा (विश्वास) केवल एक अकाल पुरख पर है उसका यम का फंदा कट जाता है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जिस हृदय में केवल प्रभु-मिलाप की तीव्र इच्छा बनी रहती है उसे कभी कोई दुख नहीं लगता।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने गहन चिंतन को सहज शब्दावली में अभिव्यक्त किया है कि जीव बाहर के ज्ञान के अभिमान में कभी अपने अंत:करण में झांकने का प्रयास ही नहीं करता। यह हकीकत है कि बाहरी ज्ञान से उसकी तृष्णा नहीं मिटती, लेकिन जब गुरु-कृपा से उसके भीतर के ज्ञान के चक्षु खुलते हैं तभी वह समस्त तृष्णाओं से मुक्त होकर आनंदपूर्वक जीवन-यापन करता है। तब उसे किसी विशेष जप-तप की या गृहस्थ को त्यागने की आवश्यकता नहीं रहती, अपितु वह गृहस्थ में रहते हुए ही मुक्तावस्था प्राप्त कर लेता है। एक परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास रखने वाले आवागमन से मुक्त हो जाते हैं।



कविता

## शब्द-मर्म

*जो धारे सारी जगती। कहते हैं उसको धरती।*
*दूर-दूर तक नील वितान। कहलाता है आसमान।*
*होता जिसमें पुण्यभोग। कहलाता है स्वर्गलोक।*
*जिसमें है मृत्यु का शोक। यही हमारा मर्त्यलोक।*
*नहीं जन्म की पुनरावृत्ति। उसको ही कहते हैं मुक्ति।*
*जो खुद को गया पहचान। उसी ने पाया सच्चा ज्ञान।*
*मानवता का जाने मर्म। उसने ही समझा है धर्म।*
*दुखियों का करने उद्धार। प्रभु लेते भू पर अवतार।*
*हो केवल ममता का नाता। और न कोई, वह है माता।*
*हो रिश्तों में आदर-प्यार। कहलाता है घर-परिवार।*
*जिसमें हो समता का राज। वही असल में है समाज।*
*खेतों में करता श्रमदान। अन्नप्रदाता वही किसान।*
*देने का न करे बखान। उस दाता का दान महान।*
*भय-स्वार्थ बिन हो सम्मान। हृदय जनित वह सच्चा मान।*
*नहीं घमंड, हो निज-सम्मान। कहलाता वह स्वाभिमान।*
*मन-मंदिर में श्रेष्ठ विचार। उच्च आचरण का आधार।*
*जो तन-मन से रहे पवित्र। सबसे उत्तम वही चरित्र।*



*-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.); मो : ०९४११६०७६७२*

Final

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : १६

# स. प्रेम सिंघ 'लालपुरा'

*-स. रूप सिंघ**

एम. एल. सी., एम. एल. ए. तथा शिरोमणि सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष के पद पर विराजमान रह चुके स. प्रेम सिंघ 'लालपुरा' का जन्म स. गंडा सिंघ तथा सरदारनी बलवंत कौर के घर २६ फरवरी, १९२५ ई. को गांव लालपुरा, ज़िला तरनतारन में हुआ। आप जी ने हाई स्कूल की परीक्षा १९४४ ई. में श्री गुरु अरजन देव खालसा हाई स्कूल, तरनतारन से उत्तीर्ण की। इन्होंने खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर में पढ़ाई के दौरान खालसा कॉलेज कबड्डी टीम का कप्तान तथा बैस्ट एथलीट होने का गौरव प्राप्त किया। इसी समय आप सिक्ख स्टूडेंटस फेडरेशन के सक्रिय सदस्य बने। इनका अनंद कारज ४ जनवरी, १९४८ ई. को सरदारनी गुरमेज कौर के साथ हुआ। इनके घर दो लड़कों एवं तीन लड़कियों ने जन्म लिया।

७ फरवरी, १९५५ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नवनिर्वाचित सदस्य साहिबान की एकत्रता के समय सरदार लालपुरा बतौर सदस्य के रूप में हाज़िर थे। १६ अक्तूबर, १९५५ को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल इजलास में राज्यों एवं क्षेत्रीय विभाजन के विरुद्ध प्रस्ताव पारित किया, जिसमें स. लालपुरा ने अपने विचार पेश किए। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का ३ दिसंबर, १९५७ को जनरल समागम हुआ, जिसमें मास्टर तारा सिंघ जी अध्यक्ष तथा स. प्रेम सिंघ 'लालपुरा' महासचिव चुने गए।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के १६ नवंबर, १९५८ ई. के वार्षिक समागम के समय अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पद के लिए स. जोगिंदर सिंघ मुकेरियां की तजवीज़ पर मास्टर तारा सिंघ जी का नाम तथा स. कुंदन सिंघ जी की तजवीज़ पर स. प्रेम सिंघ 'लालपुरा' का नाम पेश हुआ। दो नाम पेश होने के कारण वोटें डाली गईं। मास्टर तारा सिंघ जी को ७४ वोटें पड़ीं व स. प्रेम सिंघ 'लालपुरा' के हक में ७७ वोटें पड़ीं। इस तरह स. प्रेम सिंघ 'लालपुरा' तीन वोटों के अतंर से चुनाव जीतकर बतौर अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर चुने गए। उपरांत इनकी अध्यक्षता में वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कनिष्ठ उपाध्यक्ष, महासचिव तथा कार्यकारिणी का चुनाव हुआ।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का वार्षिक बजट इजलास ७ मार्च, १९५९ ई. को इनकी अध्यक्षता में हुआ, जिसमें १७२ सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हाज़िर थे। कार्यवाही आरंभ करने से पूर्व अध्यक्ष साहिब ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पहले १६२ सदस्य थे, अब २०९ हो गए हैं। ४७ सदस्य साहिबान भूतपूर्व पैप्सू के क्षेत्र में से लिए गए हैं। उन्होंने नवनिर्वाचित सदस्य साहिबान का हार्दिक अभिनंदन किया। उपरांत ऑल इंडिया सिक्ख गुरुद्वारा बिल सबंधी आईटम पेश होने पर करार पाया कि गुरुद्वारा बिल के नए संशोधन के अनुसार जो नयी शर्त लगाई गयी है कि गुरुद्वारा वोटर वही बन सकेगा जिसको जपु जी साहिब कंठस्थ होगा, यह शर्त हटाई जाए, क्योंकि इसके अनुसार गुरुद्वारा वोटरों की सूची में से ग्रामीण क्षेत्र के वोटर काटे जाने

*सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९

Final

पर मात्र शहर के वोटर रह जाएंगे। यह विचार इस संबंध में निम्नलिखित प्रस्ताव पेश तथा सर्व-सम्मति से पारित हुआ :-

गृह सचिव, पंजाब सरकार की पत्रिका २१जी--५९/एच. जी--८६, तिथि १४ जनवरी, १९५९, जिसके साथ उन्होंने ऑल इंडिया गुरुद्वारा बिल की एक कापी भेजकर इस सम्बंधी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की राय मांगी है, पेश हुई, क्योंकि यह मामला सिक्ख धर्म से गहरा सम्बंध रखता है तथा इसको विचारने एवं राय देने के लिए नियत किया समय पर्याप्त नहीं है, इसलिए यह समागम सर्वसम्मति से गवर्नमेंट तथा स. अमर सिंघ (सहगल) एम. पी. से मांग करता है कि इस बिल सम्बंधी राय देने के लिए अवधि में कम से कम ६ माह की बढ़ोतरी की जाए तथा इसको पंजाबी में अनुवाद कर सब सिक्ख संस्थाओं एवं सभाओं की राय के लिए भेजा जाए।

गुरुद्वारा बजट तथा नये-पुराने गुरुद्वारों के बारे में इस जनरल इजलास में स. अमर सिंघ दुसांझ ने बताया कि 'एलान हुए सारे गुरुद्वारों की आमदन का अंदाज़ा अगले वर्ष के लिए लगभग ३० लाख रुपए है। देश-विभाजन से पूर्व आबंटित पंजाब में सारे एलान हुए गुरुद्वारों की संख्या ७५१ थी, जिनमें से १७९ गुरुद्वारा साहिबान पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में रह गए। पैप्सू इलाके में गुरुद्वारा एक्ट लागू होने से १७६ अन्य गुरुद्वारे शड्यिूल नं: १ के गुरुद्वारों की लिस्ट में शामिल किए गए हैं। इन गुरुद्वारों का पूर्ण चार्ज लेने में एक वर्ष लग जाएगा। उपरांत परिक्रमा स्कीम श्री दरबार साहिब के लिए ४ लाख रुपए तजवीज़ हुए तथा केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय के लिए २२ हज़ार रुपए और श्री गुरु रामदास अस्पताल के लिए १,३६,०००/- रुपए खर्च करने की तजवीज़ प्रवान की गयी। तख़्त श्री दमदमा साहिब को पंचम तख़्त की प्रवानगी भी इस जनरल समागम के समय दी गयी।

२२ अप्रैल, १९५९ ई. को इनकी अध्यक्षता में जनरल समागम आरंभ हुआ, जिसमें १५४ सदस्य शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हाज़िर थे। इस जनरल समागम में मास्टर तारा सिंघ--नेहरू समझौता के विरुद्ध प्रस्ताव पारित किया गया।

"शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी समूह ख़्यालों के सिक्खों की धार्मिक प्रतिनिधि जत्थेबंदी है तथा यह कमेटी सदा ही इस राय के पक्ष में रही है कि गुरुद्वारा प्रबंध के बारे में किसी किस्म का कोई फैसला शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रवानगी के बिना न किया जाए।" . . . ऐसा समझौता शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धार्मिक स्वतंत्रता पर सीधा हमला है, क्योंकि किसी व्यक्ति या सभा सोसायटी को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के बारे में ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं। इसके लिए यह समागम इस समझौते की सख़्त निंदा करता है। इनकी अध्यक्षता के समय ही धर्म प्रचार की ज़रूरत को मुख्य रखते हुए बाकायदा चुनाव होने पर सात सदस्यों की धर्म प्रचार कमेटी बनायी गयी, जिसमें मास्टर तारा सिंघ जी बतौर सदस्य लिए गए।

इनकी अध्यक्षता में २७ नबंबर, १९५९ ई. को जनरल वार्षिक समागम आरंभ हुआ, जिसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छपाई पर मतभेदों का प्रस्ताव पेश होने पर पारित किया गया कि "शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दीर्घ विचार के पश्चात यह राय देती है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छपाई सम्बंधी चल रही चर्चा तुरंत बंद होनी चाहिए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छपाई के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज द्वारा सम्पूर्ण की गयी गुरुता प्राप्त दमदमी बीड़ को ही छपाई का आधार माना जाए।" इस सम्बंधी समूह आवश्यक कार्यवाही करने के लिए

सब-कमेटी नियत की जाती है-- अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, पांच सज्जन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से तथा पांच सज्जन संत समाज की तरफ से।

इसी दिन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के ओहदेदारों तथा कार्यकारिणी के चुनाव सम्बंधी प्रश्न पेश होने पर प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया कि अगले वर्ष (जनवरी, १९६०) में, चूंकि कमेटी का जनरल चुनाव हो रहा है, इसलिए तब तक कमेटी के नये ओहदेदारों तथा कार्यकारिणी के सदस्यों का चुनाव मुलतवी किया जाए और मौजूदा ओहदेदार तथा कार्यकारिणी के सदस्य ही यह सेवा उसी प्रकार जारी रखें।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का यह इजलास बाबा करतार सिंघ छीनेवाल तथा बाबा भोला सिंघ लोहाखेड़ा, ज़िला संगरूर की उस सेवा की प्रशंसा करता है जो उन्होंने अकाली लहर को समय गुरु का बाग के मोर्चे के अत्याचारी मिस्टर बी. टी. के कत्ल के दोष में उम्र-कैद की सज़ा काटकर की है तथा उस कैद में से वे अभी रिहा हुए हैं। इसी दिन देश-भक्तों को खुली सहायता देने के बारे में भी प्रस्ताव पेश किया गया। काफी बहस होने के बाद चार सदस्यों की सब-कमेटी बनाई गयी जो इसके बारे में अपनी रिपोर्ट इस महीने पेश करे। इस जनरल समागम में ही पास किया गया है कि श्री दमदमा साहिब गुरू की काशी को ऐतिहासिक मुहरों, रियासत पटियाला के गजटों द्वारा तथा अन्य लिखितों के मुताबिक 'तख़्त' करार देता है। इसके बारे में गुरुद्वारा एक्ट में आवश्यक संशोधन करवाने के लिए कार्यालय को अधिकार देता है। इसके बारे में काफी बहस मुबाहसे के बाद सम्पूर्ण रिपोर्ट देने के लिए १६-सदस्यीय सब-कमेटी बनायी गयी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल चुनाव के उपरांत जनरल समागम ७ मार्च, १९६० को हुआ, जिसमें स. प्रेम सिंघ एम. एल. सी. गांव लालपुरा (तरनतारन) से बतौर सदस्य हाज़िर हुए। अध्यक्ष पद के चुनाव के समय मास्टर तारा सिंघ जी सर्वसम्मति से फिर अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी चुने गए। इस तरह आप जी १६ नवंबर, १९५८ से ७ मार्च, १९६० ई तक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष पद पर विराजमान रहे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के १८ जून, १९६३ ई. को हुए जनरल इजलास में भी सरदार लालपुरा हाज़िर थे।

२९ मार्च, १९८० ई. को जनरल समागम के समय आप जी ने बतौर सचिव वार्षिक बजट पेश किया। आप जी १९ नवंबर, १९८० ई. को जनरल इजलास के समय नामज़द सदस्य के रूप में हाज़िर हुए। २१ नवंबर, १९८१; ३० अप्रैल, १९८२; ३० मार्च, १९८३ तथा ३० नवंबर, १९८३ को भी आप नामज़द सदस्य के रूप में उपस्थित थे। ३० नवंबर, १९८२ को स. प्रेम सिंघ 'लालपुरा', सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एम. एल. ए.) ने प्रस्ताव का समर्थन किया कि ओहदेदार तथा कार्यकारिणी सदस्य पहले वाले ही रहें।

राजनीतिक क्षेत्र में भी सरदार लालपुरा काफी सक्रिय रहे। १ मई, १९५८ से ६ जनवरी, १९७० ई तक निरंतर एम. एल. सी. तथा २७ जून, १९८० से २६ जून, १९८५; १४ अक्तूबर, १९८५ से १ जून, १९८६ तथा ३ मार्च, १९९७ से २६ फरवरी, २००२ तक सदस्य, पंजाब विधान सभा क्षेत्र तरनतारन से रहे। १९६९ ई में कॉमनवैल्थ देशों के इंग्लैंड में हुए सम्मेलन के समय, भारत सरकार द्वारा सरदार लालपुरा सदस्य, पंजाब विधान सभा के रूप में हाजिर हुए। आप जी आजकल ज्यादा समय कनाडा में अपने सुपुत्र के पास निवास कर रहे हैं।

*Final*

*ख़बरनामा*

## सिक्ख डॉक्टर के साथ अभद्र व्यवहार करने वाले अधिकारियों पर सख़्त कार्यवाही की जाए : जत्थे. अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १६ नवंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा है कि नयी दिल्ली हवाई अड्डे पर सिक्ख डॉक्टर स. हरमनदीप सिंघ पर तशद्दुद करने तथा उसकी साथी डॉक्टर को गलत मकसद से रोकने के कारण इमीग्रेशन एवं पुलिस अधिकारियों पर सख़्त कार्यवाही की जानी चाहिए।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी कार्यालाय से जारी प्रेस विज्ञप्ति में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि ऐसे अधिकारी, जो अपनी ड्यूटी के प्रति ईमानदार न होकर देश-विदेश से आने-जाने वाले यात्रियों के साथ अभद्र व्यवहार करके देश के नाम को बदनाम करते हैं, को बर्खास्त कर देना चाहिए। उन्होंने भारत के गृह मंत्री एवं विदेश मंत्री को अपील करते हुए कहा कि कैलीफोर्निया के शहर गाडैस्टो में रहने वाले सिक्ख डॉक्टर स. हरमनदीप सिंघ के साथ नयी दिल्ली हवाई अड्डे पर अभद्र व्यवहार करने वाले इमीग्रेशन अधिकारियों की जांच करके सख़्त कार्यवाही की जाए। उन्होंने कहा कि इमीग्रेशन तथा पुलिस अधिकारियों का फर्ज़ यात्रियों की हर पक्ष से मदद करना है न कि उनको अकारण परेशान करना। उन्होंने कहा कि यह एक अति निंदनीय घटना है।

## धर्म प्रचार कमेटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक वड्डा पुरखु परगटिआ लोकार्पित

श्री अमृतसर : ३ दिसंबर : गुरमति के प्रचार-प्रसार के लिए विद्वान लेखकों का अहम योगदान रहा है, जिनके द्वारा रचनाओं के जरिए गुरमति विचारधारा को पेश किया जाता है। सिक्खों की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी गुरमति को संगत तक पहुंचाने के लिए गुरमति के विद्वानों की रचनाओं को समय-समय पर पुस्तकों के रूप में प्रकाशित कर रही है। श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं को संगत तक पहुंचाने के मंतव्य से 'गुरमति प्रकाश' मैगज़ीन में छपे विद्वान लेखकों के आलेखों को पुनः संपादित कर एक पुस्तक के रूप में पेश किया गया है, जो संगत को श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा के साथ जोड़ेगी। इन शब्दों का प्रकटावा जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा पुस्तक 'वड्डा पुरखु परगटिआ' रिलीज़ करने के उपरांत प्रेस को सम्बोधित होते हुए किया।

उन्होंने कहा कि यह पुस्तक स. रूप सिंघ द्वारा स. सतपिंदर सिंघ, स. अरविंदर सिंघ, बीबी किरनदीप कौर, बीबी रणजीत कौर तथा बीबी अमरजीत कौर रीसर्च स्कॉलर के सहयोग के साथ मिलकर कड़ा परिश्रम करके तैयार की गयी है, जिसको धर्म प्रचार कमेटी ने प्रकाशित किया है। ज़िक्रयोग्य है कि पुस्तक को संपादक ने दो भागों में बांटा है। प्रथम भाग में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन एवं शख़्सियत, द्वितीय भाग में गुरबाणी व विचारधारा को पेश किया गया है। इस पुस्तक को शिरोमणि गु प्र कमेटी के स्कूलों तथा गुरुद्वारा साहिबान के पुस्तकालोयों में रखा जाएगा ताकि संगत में गुरमति की बात चले। उन्होंने पुस्तक के

Final

संपादक स. रूप सिंघ तथा धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. सतबीर सिंघ को मुबारकबाद दी।

इस पुस्तक में प्रो. पिआरा सिंघ पदम के पांच आलेख, स. शमशेर सिंघ अशोक के पांच आलेख, स. कपूर सिंघ के चार आलेख तथा इसी तरह भाई कान्ह सिंघ नाभा, स. एस. एस. एस., प्रिं. सतिबीर सिंघ, डॉ. नरिंदर सिंघ सोच डॉ. जगजीत सिंघ आदि पंथक विद्वानों के खोज भरपूर विभिन्न आलेख शामिल किए गए हैं। कुल ८६ आलेखों में गुरबाणी, गुर-इतिहास, गुरमति दर्शन तथा सिक्ख रहित मर्यादा आदि विषयों को बहुत ही भावपूर्ण ढंग से दर्शाया गया है।

इस अवसर अन्य के अतिरिक्त स. दलमेघ सिंघ, स. रूप सिंघ, स. मनजीत सिंघ तथा स. सतबीर सिंघ सचिव, स. जोगिंदर सिंघ ओ. एस. डी., स. दिलजीत सिंघ, स. महिंदर सिंघ आहली तथा स. हरभजन सिंघ मनावां अप सचिव एवं स. परमजीत सिंघ उपर सचिव हाज़िर थे।

## जत्थे: अवतार सिंघ ने श्री अमृतसर के पहिल सरकारी विशेष स्कूल, को दी नयी एंबूलेंस गाड़ी

श्री अमृतसर : १२ दिसंबर : धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी) द्वारा मुहैया करवाई गई नयी एंबूलेंस गाड़ी की चाबियां जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पहिल सरकारी विशेष स्कूल, माल मंडी, श्री अमृतसर के ज़रूरतमंद बच्चों के लिए स्कूल कमेटी के सभापति स. गुरमहिंदर सिंघ को सौंपीं।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि इस स्कूल में लगभग ८० ऐसे बच्चे हैं जो मंदबुद्धि, गूंगे, बहरे, नेत्रहीन, दिमागी, पक्षाघात वाले हैं। उनको स्कूल लाने एवं घर छोड़ने के लिए एक विशेष एंबूलेंस गाड़ी दी गयी है; क्योंकि उनको समय-समय पर फ़िजियोथ्रेपी, स्पीचथ्रेपी तथा व्यवसायमुखी कार्यों के लिए गाड़ी की अति आवश्यकता थी।

स्कूल को नयी एंबूलेंस गाड़ी मिलने पर ज़िला शिक्षा अफ़सर श्रीमती सुनीता किरन तथा स्कूल कमेटी के सभापति स. गुरमहिंदर सिंघ ने जत्थेदार अवतार सिंघ का धन्यवाद करते हुए कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा ज़रूरतमंद बच्चों की बड़ी मुश्किल इस नयी गाड़ी के मिलने से हल हो गयी है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ही एक ऐसी संस्था है जो इन बच्चों के लिए प्रत्येक वर्ष समागम के अवसर पर लंगर भेजती है तथा ज़रूरतमंदों की सहायता करती है।

इस अवसर स. गुरिंदरपाल सिंघ कादीआं, सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. दलमेघ सिंघ, स. रूप सिंघ, स. सतबीर सिंघ, स. मनजीत सिंघ सचिव; तथा स. महिंदर सिंघ आहली एवं स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा अपर सचिव; स. बिजै सिंघ तथा स. जगजीत सिंघ उप सचिव के अतिरिक्त स. रणजीत सिंघ खालसा, स. धरमिंदर सिंघ डी. आर. पी, स. हरजीत सिंघ, स. मंगल सिंघ, बीबी रेणू भंडारी, बीबी गुरदीप कौर, बीबी निरमल कौर, स. संदीप सिंघ, स. अमरजीत सिंघ आदि उपस्थित थे।

*प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०१-२०१४*

Final